Revelation

प्रकाशित वाक्य

John Tells About This Book

1 This is a revelation from Jesus Christ, which
God gave him to show his servants what must
happen soon. And Christ sent his angel to show
it to his servant John, 2 who has told everything
he saw. It is the truth that Jesus Christ told him;
it is the message from God. 3 Great blessings
belong to the person who reads the words of
this message from God and to those who hear
this message and do what is written in it. There
is not much time left.

John Writes to the Churches

4 From John,
To the seven churches in the province of Asia:*

Grace and peace to you from the one who is,
who always was, and who is coming; and from
the seven spirits before his throne; 5 and from
Jesus Christ. Jesus is the faithful witness. He is
first among all who will be raised from death. He
is the ruler of the kings of the earth.

Jesus is the one who loves us and has made us
free from our sins with his blood sacrifice. 6 He
made us his kingdom and priests who serve God
his Father. To Jesus be glory and power forever
and ever! Amen.

7 Look, Jesus is coming with the clouds!
Everyone will see him, even those who pierced*
him. All peoples of the earth will cry loudly
because of him. Yes, this will happen! Amen.

8 The Lord God says, "I am the Alpha and the
Omega.* I am the one who is, who always was,
and who is coming. I am the All-Powerful."

1 यह यीशु मसीह का दैवी-सन्देश है जो उसे
परमेश्वर द्वारा इसलिए दिया गया था कि जो
बातें शीघ्र ही घटने वाली हैं, उन्हें अपने दासों को दर्शा
दिया जाए। अपना स्वर्गदूत भेजकर यीशु मसीह ने
इसे अपने सेवक यूहन्ना को संकेत द्वरा बताया। 2यूहन्ना
ने जो कुछ देखा था, उसके बारे में बताया। यह वह
सत्य है जिसे उसे यीशु मसीह ने बताया था। यह वह
सन्देश है जो परमेश्वर की ओर से है। 3वे धन्य हैं जो
परमेश्वर के इस दैवी सुसन्देश के शब्दों को सुनते हैं
और जो बातें इसमें लिखी हैं, उन पर चलते हैं।
क्योंकि संकट की घड़ी निकट है।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

4-5यूहन्ना की ओर से,
एशिया प्रान्त* में स्थित सात कलीसियाओं के नाम:

उस परमेश्वर की ओर से जो वर्तमान है, जो सदा-सदा
से था और जो आनेवाला है, उन सात आत्माओं की ओर
से जो उसके सिंहासन के सामने हैं एवं उस यीशु
मसीह की ओर से जो विश्वासपूर्ण साक्षी, मरे हुओं में से
पहला जी उठने वाला तथा धरती के राजाओं का भी
राजा है, तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

वह जो हमसे प्रेम करता है तथा जिसने अपने लहू से
हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाया है। 6उसने हमें एक
राज्य तथा अपने परम पिता परमेश्वर की सेवा में
याजक होने को रचा। उसकी महिमा और सामर्थ्य
सदा-सर्वदा होती रहे। आमीन!

7देखो, मेघों के साथ मसीह आ रहा है। हर एक
आँख उसका दर्शन करेगी। उनमें वे भी होंगे, जिन्होंने
उसे बेधा था।* तथा धरती के सभी लोग उसके कारण
विलाप करेंगे। हाँ! हाँ निश्चयपूर्वक ऐसा ही हो-आमीन!

8प्रभु परमेश्वर वह जो है, जो था और जो
आनेवाला है, जो सर्वशक्तिमान है, यह कहता है,
"मैं ही अलफा और ओमेगा हूँ।"*

Asia The geographical area, sometimes called Asia Minor, that is now the western part of modern Turkey.

1:7 ***pierced*** When Jesus was killed, he was stabbed with a spear in the side. See Jn. 19:34.

1:8 ***Alpha ... Omega*** The first and last letters in the Greek alphabet, meaning the beginning and the end.

एशिया प्रान्त एशिया माइनर का एक प्रान्त।

1:7 बेधा था देखें यूहन्ना 19:34

1:8 अलफा ... ओमेगा हूँ मूल में ये यूनानी की बाहरखड़ी के पहले और अंतिम अक्षरों के नाम है। अर्थात् अलफा यानि 'आदि' और ओमेगा यानि 'अंत,' दोनों प्रभु परमेश्वर ही है।

9 I am John, your fellow believer. We are
together in Jesus, and we share these things:
suffering, the kingdom, and patient endurance. I
was on the island of Patmos* because I was faithful
to God's message and to the truth of Jesus. 10 On
the Lord's Day, the Spirit took control of me. I
heard a loud voice behind me that sounded like a
trumpet. 11 It said, "Write down in a book what
you see, and send it to the seven churches: to
Ephesus, Smyrna, Pergamum, Thyatira, Sardis,
Philadelphia, and Laodicea."

12 I turned to see who was talking to me.
When I turned, I saw seven golden lampstands.
13 I saw someone among the lampstands who
looked like the Son of Man. He was dressed in a
long robe, with a golden sash tied around his
chest. 14 His head and hair were white like
wool—wool that is white as snow. His eyes were
like flames of fire. 15 His feet were like brass
that glows hot in a furnace. His voice was like
the noise of flooding water. 16 He held seven
stars in his right hand. A sharp two-edged sword
came out of his mouth. He looked like the sun
shining at its brightest time.

17 When I saw him, I fell down at his feet like
a dead man. He put his right hand on me and
said, "Don't be afraid! I am the First and the Last.
18 I am the one who lives. I was dead, but look,
I am alive forever and ever! And I hold the keys
of death and Hades.* 19 So write what you see.
Write the things that happen now and the things
that will happen later. 20 Here is the hidden
meaning of the seven stars that you saw in my
right hand and the seven golden lampstands that
you saw: The seven lampstands are the seven
churches. The seven stars are the angels of the
seven churches.

Jesus' Letter to the Church in Ephesus

2 "Write this to the angel of the church in
Ephesus:

1:9 ***Patmos*** A small island in the Aegean Sea, near the coast of modern Turkey.

Hades The Greek word for "Sheol," the home of the dead. It is often used as a metaphor for death.

9मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ और यातनाओं, राज्य तथा
यीशु में, धैर्यपूर्ण सहनशीलता में तुम्हारा साक्षी हूँ।
परमेश्वर के वचन और यीशु की साक्षी के कारण मुझे
पत्तमुस* नाम के द्वीप में देश निकाला दे दिया गया
था। 10प्रभु के दिन मैं आत्मा के वशीभूत हो उठा और
मैंने अपने पीछे तुरही की सी एक तीव्र आवाज़ सुनी।
11वह कह रही थी, "जो कुछ तू देख रहा है, उसे एक
पुस्तक में लिखता जा और फिर उसे इफिसुस, स्मुरना,
पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और
लौदीकिया की सातों कलीसियाओं को भेज दे।"

12फिर यह देखने को कि वह आवाज़ किसकी है
जो मुझसे बोल रही थी, मैं मुड़ा। और जब मैं मुड़ा तो
मैंने सोने के सात दीपाधार देखे। 13और उन दीपाधारों
के बीच मैंने एक व्यक्ति को देखा जो "मनुष्य के पुत्र"
के जैसा कोई पुरुष था। उसने अपने पैरों तक लम्बा
चोगा पहन रखा था। तथा उसकी छाती पर एक सुनहरी
पटका लिपटा हुआ था। 14उसके सिर तथा केश सफेद
ऊन जैसे उजले थे। तथा उसके नेत्र अग्नि की चमचमाती
लपटों के समान थे। 15उसके चरण भट्टी में अभी-
अभी तपाए गए उत्तम काँसे के समान चमक रहे थे।
उसका स्वर अनेक जलधाराओं के गर्जन के समान
था। 16तथा उसने अपने दाहिने हाथ में सात तारे लिए
हुए थे। उसके मुख से एक तेज दोधारी तलवार बाहर
निकल रही थी। उसकी छवि तीव्रतम दमकते सूर्य के
समान उज्ज्वल थी।

17मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए
के समान गिर पड़ा। फिर उसने मुझ पर अपना दाहिना
हाथ रखते हुए कहा, "डर मत, मैं ही प्रथम हूँ और मैं
ही अंतिम भी हूँ। 18और मैं ही वह हूँ, जो जीवित है।
मैं मर गया था, किन्तु देख अब मैं सदा-सर्वदा के लिए
जीवित हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक* की कुंजियाँ
हैं। 19सो जो कुछ तूने देखा है, जो कुछ घट रहा है,
और जो भविष्य में घटने जा रहा है, उसे लिखता जा।
20ये जो सात तारे हैं जिन्हें तूने मेरे हाथ में देखा है और
ये जो सात दीपाधार हैं, इनका रहस्यपूर्ण अर्थ है: ये
सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं तथा ये सात
दीपाधार सात कलीसियाएँ हैं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

2 "इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम
यह लिख:

1:9 पत्तमुस एइजियन सागर में एशिया माइनर (जो आजकल टर्की कहलाता है) के तट के निकट छोटा द्वीप।

अधोलोक मूल में हेइस अर्थात् वह लोग जहाँ मरने के बाद जाते हैं।

"Here is a message from the one who holds the seven stars in his right hand and walks among the seven golden lampstands.

2"I know what you do, how hard you work and never give up. I know that you don't accept evil people. You have tested those who say they are apostles but are not. You found that they are liars. 3 You never stop trying. You have endured troubles for my name and have not given up.

4"But I have this against you: You have left the love you had in the beginning. 5 So remember where you were before you fell. Change your hearts and do what you did at first. If you don't change, I will come to you and remove your lampstand from its place. 6 But there is something you do that is right—you hate the things that the Nicolaitans* do. I also hate what they do.

7"Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches. To those who win the victory I will give the right to eat the fruit from the tree of life, which is in God's paradise.

Jesus' Letter to the Church in Smyrna

8"Write this to the angel of the church in Smyrna:

"Here is a message from the one who is the First and the Last, the one who died and came to life again.

9"I know your troubles, and I know that you are poor, but really you are rich! I know the insults you have suffered from people who say they are Jews. But they are not true Jews. They are a group that belongs to Satan. 10 Don't be afraid of what will happen to you. I tell you, the devil will put some of you in prison. He will do this to test you. You will suffer for ten days, but be faithful, even if you have to die. If you continue to be faithful, I will give you the reward of life.

2:6 ***Nicolaitans*** A religious group that followed wrong ideas. Also in verse 15.

"वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को धारण करता है तथा जो सात दीपाधारों के बीच विचरण करता है; इस प्रकार कहता है:

2"मैं तेरे कर्मों कठोर परिश्रम और धैर्यपूर्ण सहनशीलता को जानता हूँ तथा मैं यह भी जानता हूँ, कि तू बुरे लोगों को सहन नहीं कर पाता है तथा तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि वे प्रेरित हैं किन्तु हैं नहीं। तूने उन्हें झूठा पाया है। 3मैं जानता हूँ कि तुझमें धीरज है और मेरे नाम पर तूने कठिनाइयाँ झेली हैं और तू थका नहीं है।

4"किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तूने वह प्रेम त्याग दिया है जो आरम्भ में तुझमें था। 5सो याद कर कि तू कहाँ से गिरा है, मनफिरा तथा उन कर्मों को कर जिन्हें तू प्रारम्भ में किया करता था, नहीं तो, यदि तूने मन न फिराया, तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरे दीपाधार को उसके स्थान से हटा दूँगा। 6किन्तु यह बात तेरे पक्ष में है कि तू नीकुलइयों* के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ।

7"जिसके पास कान हैं, वह उसे सुनें जो आत्मा कलीसियाओं से कह रहा है। "जो विजय पाएगा मैं उसे परमेश्वर के उपवन में लगे जीवन के वृक्ष से फल खाने का अधिकार दूँगा।"

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

8"स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:

"वह जो प्रथम है और जो अन्तिम है, जो मर गया था तथा जो पुनर्जीवित हो उठा है, इस प्रकार कहता है,

9"मैं तुम्हारी यातना और तुम्हारी दीनता के विषय में जानता हूँ। यद्यपि वास्तव में तुम धनवान हो! जो अपने आपको यहूदी कह रहे हैं, उन्होंने तुम्हारी जो निन्दा की है, मैं उसे भी जानता हूँ। यद्यपि वे यहूदी हैं नहीं। बल्कि वे तो उपासकों का एक ऐसा जमघट है जो शैतान से सम्बन्धित है। 10उन यातनाओं से तू बिल्कुल भी मत डर जो तुझे झेलनी हैं। सुनो, शैतान तुम लोगों में से कुछ को बंदीगृह में डालकर तुम्हारी परीक्षा लेने जा रहा है। और तुम्हें वहाँ दस दिन तक यातना भोगनी होगी। चाहे तुझे मर ही जाना पड़े, पर सच्चा बने रहना मैं तुझे अनन्त जीवन का विजय मुकुट प्रदान करूँगा।

2:6 नीकुलइयों एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयों नाम के व्यक्ति पर किया गया होगा।

11"Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches. Those who win the victory will not be hurt by the second death.

Jesus' Letter to the Church in Pergamum

12 "Write this to the angel of the church in Pergamum:

"Here is a message from the one who has the sharp two-edged sword.

13"I know where you live. You live where Satan has his throne, but you are true to me. You did not refuse to tell about your faith in me even during the time of Antipas. Antipas was my faithful witness who was killed in your city, the city where Satan lives.

14"But I have a few things against you. You have people there who follow the teaching of Balaam. Balaam taught Balak how to make the people of Israel sin. They sinned by eating food offered to idols and by committing sexual sins. 15 It is the same in your group. You have people who follow the teaching of the Nicolaitans. 16 So change your hearts! If you don't change, I will come to you quickly and fight against these people with the sword that comes out of my mouth.

17"Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches!

"I will give the hidden manna to everyone who wins the victory. I will also give each one a white stone that has a new name written on it. And no one will know this name except the one who gets the stone.

Jesus' Letter to the Church in Thyatira

18"Write this to the angel of the church in Thyatira:

"Here is a message from the Son of God, the one who has eyes that blaze like fire and feet like shining brass.

19"I know what you do. I know about your love, your faith, your service, and your patience. I know that you are doing more now than you did at first. 20 But I have this against you: You let that woman Jezebel do what she wants. She says

11"जो सुन सकता है वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रही है। जो विजयी होगा उसे दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं उठानी होगी।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

12"पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत यह लिख:

"वह जो तेज दोधारी तलवार को धारण करता है, इस प्रकार कहता है:

13"मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा है। तू वहाँ रह रहा है जहाँ शैतान का सिंहासन है और मैं यह भी जानता हूँ कि तू मेरे नाम को थामे हुए है तथा तूने मेरे प्रति अपने विश्वास को कभी नहीं नकारा है। तुम्हारे उस नगर में जहाँ शैतान का निवास है, मेरा विश्वासपूर्ण साक्षी अन्तिपास मार दिया गया था।

14"कुछ भी हो, मेरे पास तेरे विरोध में कुछ बातें हैं। तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिलाम की सीख पर चलते हैं। उसने बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल के लोगों को मूर्तियों का चढ़ावा खाने और व्यभिचार करने को प्रोत्साहित करे। 15इसी प्रकार तेरे यहाँ भी कुछ ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की सीख पर चलते हैं। 16इसलिए मन फिरा नहीं तो मैं जल्दी ही तेरे पास आऊँगा और उनके विरोध में उस तलवार से युद्ध करूँगा जो मेरे मुख से निकलती है।

17"जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है,

"जो विजयी होगा, मैं उसे स्वर्ग में छिपा मन्ना दूँगा। मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम अंकित होगा। जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता जिसे वह दिया गया है।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

18"थूआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम:

"परमेश्वर का पुत्र, जिसके नेत्र धधकती आग के समान हैं, तथा जिसके चरण शुद्ध काँसे के जैसे हैं, इस प्रकार कहता है:

19"मैं तेरे कर्मों, तेरे विश्वास, तेरी सेवा तथा तेरी धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि अब तू जितना पहले किया करता था, उससे अधिक कर रहा है। 20किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तू इजेबेल नाम की उस स्त्री को सह रहा है जो अपने

that she is a prophet, but she is leading my people away with her teaching. Jezebel leads my people to commit sexual sins and to eat food that is offered to idols. 21 I have given her time to change her heart and turn away from her sin, but she does not want to change.

22 "So I will throw her on a bed of suffering. And all those who commit adultery with her will suffer greatly. I will do this now if they don't turn away from the things she does. 23 I will also kill her followers. Then all the churches will see that I am the one who knows what people feel and think. And I will repay each of you for what you have done.

24 "But others of you in Thyatira have not followed her teaching. You have not learned the things they call 'Satan's deep secrets.' This is what I say to you: I will not put any other burden on you. 25 Only hold on to the truth you have until I come.

26 "I will give power over the nations to all those who win the victory and continue until the end to do what I want.

27 They will rule the nations with
an iron rod.
They will break them to pieces
like clay pots. *Psalm 2:9*

28 They will have the same power I received from my Father, and I will give them the morning star. 29 Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches.

Jesus' Letter to the Church in Sardis

3 "Write this to the angel of the church in Sardis:

"Here is a message from the one who has the seven spirits and the seven stars.

"I know what you do. People say that you are alive, but really you are dead. 2 Wake up! Make yourselves stronger before what little strength you have left is completely gone. I find that what you do is not good enough for my God. 3 So don't forget what you have received and heard. Obey it. Change your hearts and lives!

आपको नबी कहती है। अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों को व्यभिचार के प्रति तथा मूर्तियों का चढ़ावा खाने को प्रेरित करती है। 21मैंने उसे मन फिराने का अवसर दिया है किन्तु वह परमेश्वर के प्रति व्यभिचार के लिए मन फिराना नहीं चाहती।

22"इसलिए अब मैं उसे पीड़ा की शैया पर डालने ही वाला हूँ। तथा उन्हें भी जो उसके साथ व्यभिचार में सम्मिलित हैं। ताकि वे उस समय तक गहन पीड़ा का अनुभव करते रहें जब तक वे उसके साथ किए अपने बुरे कर्मों के लिए मन न फिरावें। 23मैं महामारी से उसके बच्चों को मार डालूँगा और सभी कलीसियाओं को यह पता चल जाएगा कि मैं वही हूँ जो लोगों के मन और उनकी बुद्धि को जानता है। मैं तुम सब लोगों को तुम्हारे कर्मो के अनुसार दूँगा।

24"अब मुझे थूआतीरा के उन शेष लोगों से कुछ कहना है जो इस सीख पर नहीं चलते और जो शैतान के तथा कथित गहन रहस्यों को नहीं जानते। मुझे तुम पर कोई और बोझ नहीं डालना है। 25किन्तु जो तुम्हारे पास है, उस पर मेरे आने तक चलते रहो।

26"जो विजय प्राप्त करेगा और जिन बातों का मैंने आदेश दिया है, अंत तक उन पर टिका रहेगा, मैं उन्हें जातियों पर अधिकार दूँगा।

27 तथा वह उन पर लोहे के डण्डे से
शासन करेगा।
वह उन्हें माटी के भाँड़ों की तरह
चूर-चूर कर देगा।
भजन संहिता 2:9

28यह वही अधिकार है जिसे मैंने अपने परम पिता से पाया है। मैं भी उस व्यक्ति को भोर का तारा दूँगा। 29जिसके पास कान हैं, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

3 "सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को इस प्रकार लिख:

"ऐसा वह कहता है जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ तथा सात तारे हैं।

"मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ, लोगों का कहना है कि तुम जीवित हो किन्तु वास्तव में तुम मरे हुए हो। 2सावधान रह! तथा जो कुछ शेष है, इससे पहले कि वह पूरी तरह नष्ट हो जाए, उसे सुदृढ़ बना क्योंकि अपने परमेश्वर की निगाह में मैंने तेरे कर्मों को उत्तम नहीं पाया है। 3सो जिस उपदेश को

You must wake up, or I will come to you and surprise you like a thief. You will not know when I will come.

4 "But you have a few people in your group there in Sardis who have kept themselves clean. They will walk with me. They will wear white clothes, because they are worthy. 5 Everyone who wins the victory will be dressed in white clothes like them. I will not remove their names from the book of life. I will say that they belong to me before my Father and before his angels. 6 Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches.

Jesus' Letter to the Church in Philadelphia

7 "Write this to the angel of the church in Philadelphia:

"Here is a message from the one who is holy and true, the one who holds the key of David. When he opens something, it cannot be closed. And when he closes something, it cannot be opened.

8 "I know what you do. I have put before you an open door that no one can close. I know you are weak, but you have followed my teaching. You were not afraid to speak my name. 9 Listen! There is a group that belongs to Satan. They say they are Jews, but they are liars. They are not true Jews. I will make them come before you and bow at your feet. They will know that you are the people I have loved. 10 You followed my command to endure patiently. So I will keep you from the time of trouble that will come to the world—a time that will test everyone living on earth.

11 "I am coming soon. Hold on to the faith you have, so that no one can take away your crown. 12 Those who win the victory will be pillars in the temple of my God. I will make that happen for them. They will never again have to leave God's temple. I will write on them the name of my God and the name of the city of my God. That city is the new Jerusalem. It is coming down out of heaven from my God. I will also write my new name on them. 13 Everyone who hears this should listen to what the Spirit says to the churches.

तूने सुना है और प्राप्त किया है, उसे याद कर। उसी पर चल और मनफिराव कर। यदि तू जागा नहीं तो अचानक चोर के समान मैं चला आऊँगा। मैं तुझे कब अचरज में डाल दूँ, तुझे पता भी नहीं चल पाएगा।

4 "कुछ भी हो सरदीस में तेरे पास कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने को अशुद्ध नहीं किया है। वे श्वेत वस्त्र धारण किए हुए मेरे साथ-साथ घूमेंगे क्योंकि वे सुयोग्य हैं। 5 जो विजयी होगा वह इसी प्रकार श्वेत वस्त्र धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से उसका नाम नहीं मिटाऊँगा, बल्कि मैं तो उसके नाम को अपने परम पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम्मुख मान्यता प्रदान करूँगा।" 6 जिसके पास कान है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रही है।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

7 "फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:

"वह जो पवित्र और सत्य है तथा जिसके पास दाऊद की कुंजी है जो ऐसा द्वार खोलता है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता, तथा जो ऐसा द्वार बंद करता है, जिसे कोई खोल नहीं सकता; इस प्रकार कहता है।

8 "मैं तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ। देखो मैंने तुम्हारे सामने एक द्वार खोल दिया है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि तेरी शक्ति थोड़ी सी है किन्तु तूने मेरे उपदेशों का पालन किया है तथा मेरे नाम को नकारा नहीं है। 9 सुनो कुछ ऐसे हैं जो शैतान की मण्डली के हैं तथा जो यहूदी न होते हुए भी अपने को यहूदी कहते हैं, जो मात्र झूठे हैं, मैं उन्हें यहाँ आने को विवश करके तेरे चरणों तले झुका दूँगा तथा मैं उन्हें विवश करूँगा कि वे यह जानें कि तुम मेरे प्रिय हो। 10 क्योंकि तुमने धैर्यपूर्वक सहनशीलता के मेरे आदेश का पालन किया है। बदले में मैं भी उस परीक्षा की घड़ी से तुम्हारी रक्षा करूँगा जो इस धरती पर रहने वालों को परखने के लिए समूचे संसार पर बस आने ही वाली है।

11 "मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। जो कुछ तुम्हारे पास है, उस पर डटे रहो ताकि तुम्हारे विजय मुकुट को कोई तुमसे न ले ले। 12 जो विजयी होगा उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा। फिर कभी वह इस मन्दिर से बाहर नहीं जाएगा। तथा मैं अपने परमेश्वर का और अपने परमेश्वर की नगरी का नए यरूशलेम का नाम उस पर लिखूँगा, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरने वाली है। उस पर मैं अपना नया नाम भी लिखूँगा।" 13 जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रही है?

Jesus' Letter to the Church in Laodicea

14 "Write this to the angel of the church in
Laodicea:

"Here is a message from the Amen,* the
faithful and true witness, the ruler of all that God
has made.

15 "I know what you do. You are not hot or
cold. I wish that you were hot or cold! 16 But you
are only warm—not hot, not cold. So I am ready
to spit you out of my mouth. 17 You say you are
rich. You think you have become wealthy and
don't need anything. But you don't know that
you are really miserable, pitiful, poor, blind, and
naked. 18 I advise you to buy gold from me—gold
made pure in fire. Then you will be rich. I tell
you this: Buy clothes that are white. Then you
will be able to cover your shameful nakedness. I
also tell you to buy medicine to put on your eyes.
Then you will be able to see.

19 "I correct and punish the people I love. So
show that nothing is more important to you than
living right. Change your hearts and lives.
20 Here I am! I stand at the door and knock. If you
hear my voice and open the door, I will come in
and eat with you. And you will eat with me.

21 "I will let everyone who wins the victory
sit with me on my throne. It was the same with
me. I won the victory and sat down with my
Father on his throne. 22 Everyone who hears
this should listen to what the Spirit says to the
churches."

John Sees Heaven

4 Then I looked, and there before me was an
open door in heaven. And I heard the same
voice that spoke to me before. It was the voice
that sounded like a trumpet. It said, "Come up
here, and I will show you what must happen
after this." 2 Immediately the Spirit took control
of me, and there in heaven was a throne with
someone sitting on it. 3 The one sitting there

3:14 ***Amen*** Used here, as a name for Jesus, it means to agree strongly that something is true.

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह के सन्देश

14 "लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को
यह लिख:

"जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण है तथा सच्चा
साक्षी है, जो परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, इस
प्रकार कहता है:

15 "मैं तेरे कर्मों को जानता हूँ और यह भी कि
न तो तू शीतल होता है और न गर्म। 16 इसलिए
क्योंकि तू गुनगुना है न गर्म और न ही शीतल, मैं
तुझे अपने मुख से उगलने जा रहा हूँ। 17 तू कहता
है, मैं धनी हो गया हूँ और मुझे किसी वस्तु की
आवश्यकता नहीं है किन्तु तुझे पता नहीं है कि तू
अभागा है, दयनीय है, दीन है, अंधा है और नंगा
है। 18 मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू मुझसे आग में
तपाया हुआ सोना मोल ले ले ताकि तू सचमुच
धनवान हो जाए। पहनने के लिए श्वेत वस्त्र भी
मोल ले ले ताकि तेरी लज्जापूर्ण नग्नता का
तमाशा न बने। अपने नेत्रों में आँजने के लिए तू
अंजन भी ले ले ताकि तू देख पाए।

19 "उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं
डाँटता हूँ और अनुशासित करता हूँ। तो फिर
कठिन जतन और मनफिराव कर। 20 सुन, मैं द्वार
पर खड़ा हूँ और खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मेरी
आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है तो मैं उसके
घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठकर खाना
खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना खाएगा।

21 "जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ अपने
सिंहासन पर बैठने का गौरव प्रदान करूँगा। ठीक वैसे
ही जैसे मैं विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके
सिंहासन पर बैठा हूँ। 22 जो सुन सकता है सुने, कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रही है।"

स्वर्ग के दर्शन

4 इसके बाद मैंने दृष्टि उठाई और स्वर्ग का
खुला द्वार मेरे सामने था। और वही आवाज़
जिसे मैंने पहले सुना था, तुरही के से स्वर में
मुझसे कह रही थी, "यहीं ऊपर आ जा। मैं तुझे
वह दिखाऊँगा जिसका भविष्य में होना निश्चित
है।" 2 फिर मैं तुरन्त ही आत्मा के वशीभूत हो
उठा। मैंने देखा कि मेरे सामने स्वर्ग का सिंहासन
था और उस पर कोई विराजमान था। 3 जो वहाँ

3:14 आमीन इस शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरूप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशु के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

was as beautiful as precious stones, like jasper and carnelian. All around the throne was a rainbow with clear colors like an emerald.

4 In a circle around the throne were 24 other thrones with 24 elders* sitting on them. The elders were dressed in white, and they had golden crowns on their heads. 5 Lightning flashes and noises of thunder came from the throne. Before the throne there were seven lamps burning, which are the seven Spirits of God. 6 Also before the throne there was something that looked like a sea of glass, as clear as crystal.

In front of the throne and on each side of it there were four living beings. They had eyes all over them, in front and in back. 7 The first living being was like a lion. The second was like a bull. The third had a face like a man. The fourth was like a flying eagle. 8 Each of these four living beings had six wings. They were covered all over with eyes, inside and out. Day and night they never stopped saying,

"Holy, holy, holy is the Lord God All-Powerful.
He always was, he is, and he is coming."

9 These living beings were giving glory and honor and thanks to the one who sits on the throne, the one who lives forever and ever. And every time they did this, 10 the 24 elders bowed down before the one who sits on the throne. They worshiped him who lives forever and ever. They put their crowns down before the throne and said,

11 "Our Lord and God!
You are worthy to receive glory
and honor and power.
You made all things.
Everything existed and was made
because you wanted it."

elders (in Revelation) The 24 elders in Revelation could be the great leaders of God's people under both the Old Testament and New Testament periods, combining the leaders of the twelve tribes of Israel and Jesus' twelve apostles. Or they could be angels as leaders of heavenly worship, corresponding to the 24 groups of priests in charge of worship in the Old Testament.

विराजमान था, उसकी आभा यशब और गोमेद के समान थी। उसके सिंहासन के चारों ओर एक इन्द्रधनुष था जो पन्ने जैसा दमक रहा था।

4उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन और थे। जिन पर चौबीस प्राचीन* बैठे हुए थे। उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे। उनके सिर पर सोने के मुकुट थे। 5सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध, घड़घड़ाहट तथा मेघों का गर्जन-तर्जन निकल रहे थे। सिंहासन के सामने ही लपलपाती हुई सात मशालें जल रही थीं। ये मशालें परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। 6सिंहासन के सामने पारदर्शी काँच का स्फटिक सागर सा फैला था।

सिंहासन के ठीक सामने तथा उसके दोनों ओर चार प्राणी थे। उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं। 7पहला प्राणी सिंह के समान था, दूसरा प्राणी बैल के जैसा था, तीसरे प्राणी का मुख मनुष्य के जैसा था और चौथा प्राणी उड़ते हुए गरूड़ जैसा था। 8इन चारों ही प्राणियों के छह छह पंख थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आँखें ही आँखें भरी पड़ीं थीं। दिन रात वे निरन्तर कहते रहते थे:

"सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पवित्र है,
पवित्र है, पवित्र है,
जो था, जो है और जो आनेवाला है।"

9जब ये सजीव प्राणी उस अजर अमर की महिमा, आदर और धन्यवाद कर रहे हैं जो सिंहासन पर विराजमान था तो 10वे चौबीसों प्राचीन उसके चरणों में गिरकर, उस सदा सर्वदा जीवित रहने वाले की उपासना करते हैं। वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट डाल देते हैं और कहते हैं:

11"हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर!
तू ही महिमा, आदर और शक्ति
पाने को सुयोग्य है।
क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से
सभी वस्तु सरजी हैं।
तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है।
और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।"

प्राचीन (प्रकाशित वाक्य में) कदाचित इन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष हैं जो परमेश्वर के संत जनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो। तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हैं।

Who Can Open the Scroll?

5 Then I saw a scroll* in the right hand of the
one sitting on the throne. The scroll had
writing on both sides and was kept closed
with seven seals. 2 And I saw a powerful angel,
who called in a loud voice, "Who is worthy
to break the seals and open the scroll?" 3 But
there was no one in heaven or on earth or
under the earth who could open the scroll or
look inside it. 4 I cried and cried because
there was no one who was worthy to open the
scroll or look inside. 5 But one of the elders
said to me, "Don't cry! The Lion from the tribe
of Judah has won the victory. He is David's
descendant. He is able to open the scroll and its
seven seals."

6 Then I saw a Lamb standing in the
center near the throne with the four living
beings around it. The elders were also around
the Lamb. The Lamb looked as if it had been
killed. It had seven horns and seven eyes,
which are the seven spirits of God that were
sent into all the world. 7 The Lamb came and
took the scroll from the right hand of the one
sitting on the throne. 8 After the Lamb took the
scroll, the four living beings and the 24 elders
bowed down before the Lamb. Each one of them
had a harp. Also, they were holding golden bowls
full of incense, which are the prayers of God's
holy people. 9 And they all sang a new song to
the Lamb:

"You are worthy to take the scroll
and to open its seals,
because you were killed,
and with your blood sacrifice
you bought people for God
from every tribe, language,
race of people, and nation.

scroll A long roll of paper or leather used for writing on.

पुस्तक कौन खोल सकता है?

5 फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान
था, उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ
पुस्तक* अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर
लपेट दिया जाता था। जिस पर दोनों ओर लिखावट
थी। तथा उसे सात मुहर लगाकर मुद्रित किया
हुआ था। 2मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत की ओर
देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा था-"इस
लपेटे हुए पुस्तक की मुहरों को तोड़ने और इसे
खोलने में समर्थ कौन है?" 3किन्तु स्वर्ग में अथवा
पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था
जो उस लपेटे हुए पुस्तक को खोले और उसके
भीतर झाँके। 4क्योंकि उस पुस्तक को खोलने की
क्षमता रखने वाला या भीतर से उसे देखने की
शक्ति वाला कोई भी नहीं मिल पाया था इसलिए मैं
सुबक-सुबक कर रो पड़ा। 5फिर उन प्राचीनों में से
एक ने मुझसे कहा, "रोना बन्द कर। सुन, यहूदा के
वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है विजयी हुआ
है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस लपेटे
हुए पुस्तक को खोलने में समर्थ है।"

6फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार
प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में
एक मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो
उसकी बलि चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे
और सात आँखें थीं जो परमेश्वर की सात आत्माएँ
हैं। जिन्हें समूची धरती पर भेजा गया था। 7फिर
वह आया और जो सिंहासन पर विराजमान था,
उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा हुआ पुस्तक
ले लिया। 8जब उसने वह लपेटा हुआ पुस्तक ले
लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों
ने उस मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से
हरेक के पास वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री
से भरे सोने के धूपदान थामे थे; जो संत जनों की
प्रार्थनाएँ हैं। 9वे एक नया गीत गा रहे थे:

"तू यह पुस्तक लेने को समर्थ है,
और जो इस पर लगी मुहर खोलने को
क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया,
और अपने लहू से तूने परमेश्वर के हेतु
जनों को हर जाति से, हर भाषा से,
सभी कुलों से, सब राष्ट्रों से मोल लिया।

पुस्तक एक लम्बा लपेटा हुआ कागज अथवा चमड़ा जिसे प्राचीन युग में लिखने के काम में लाया जाता था।

10 You made them to be a kingdom and
to be priests for our God.
And they will rule on the earth."

11 Then I looked, and I heard the voices of many angels. The angels were around the throne, the four living beings, and the elders. There were thousands and thousands of angels—10,000 times 10,000. 12 The angels said in a loud voice,

"All power, wealth, wisdom,
and strength belong to the Lamb
who was killed.
He is worthy to receive honor, glory,
and praise!"

13 Then I heard every created being that is in heaven and on earth and under the earth and in the sea, everything in all these places, saying,

"All praise and honor and glory and
power forever and ever
to the one who sits on the throne
and to the Lamb!"

14 The four living beings said, "Amen!" And the elders bowed down and worshiped.

The Lamb Opens the Scroll

6 Then I watched as the Lamb opened the first of the seven seals. Then I heard one of the four living beings speak with a voice like thunder. It said, "Come!" 2 I looked, and there before me was a white horse. The rider on the horse held a bow and was given a crown. He rode out to defeat the enemy and win the victory.

3 The Lamb opened the second seal. Then I heard the second living being say, "Come!" 4 Then another horse came out, a red one. The rider on the horse was given power to take away peace from the earth so that people would kill each other. He was given a big sword.

5 The Lamb opened the third seal. Then I heard the third living being say, "Come!" I

10 और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया।
और हमारे परमेश्वर के हेतु
उन्हें याजक बनाया।
वहीं धरा पर राज्य करेंगे।

11तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों को सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के चारों ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और करोड़ों थी 12वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे:

"वह मेमना जो मार
डाला गया था,
वह पराक्रम, धन, विवेक, बल, आदर,
महिमा और स्तुति प्राप्त करने को योग्य है।"

13फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की पाताल लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि - हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड का हर प्राणी कह रहा था:

"जो सिंहासन पर बैठा है
और मेमना का स्तुति,
आदर, महिमा और पराक्रम सर्वदा रहें।"

14फिर उन चारों प्राणियों ने "आमीन" कहा और प्राचीनों ने नत मस्तक होकर उपासना की।

मेमने का पुस्तक खोलना

6 मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने मेघ गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना, "आ!" 2जब मैंने दृष्टि उठाई तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार धनुष लिए हुए था। उसे विजयमुकुट पहनाया गया और वह विजय पाने के लिए विजय प्राप्त करता हुआ बाहर चला गया।

3जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी को कहते सुना, "आ!" इस पर अग्नि के समान लाल रंग का 4एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे सवार को धरती से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी तलवार दे दी गयी।

5मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी को कहते सुना, "आ!" जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ मेरे सामने एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर

looked, and there before me was a black horse. The rider on the horse held a pair of scales in his hand. 6 Then I heard something that sounded like a voice. The voice came from where the four living beings were. It said, "A quart of wheat or three quarts of barley will cost a full day's pay. But don't harm the supply of olive oil and wine!"

7 The Lamb opened the fourth seal. Then I heard the voice of the fourth living being say, "Come!" 8 I looked, and there before me was a pale-colored horse. The rider on the horse was death, and Hades was following close behind him. They were given power over a fourth of the earth—power to kill people with the sword, by starving, by disease, and with the wild animals of the earth.

9 The Lamb opened the fifth seal. Then I saw some souls under the altar. They were the souls of those who had been killed because they were faithful to God's message and to the truth they had received. 10 These souls shouted in a loud voice, "Holy and true Lord, how long until you judge the people of the earth and punish them for killing us?" 11 Then each one of them was given a white robe. They were told to wait a short time longer. There were still some of their brothers and sisters in the service of Christ who must be killed as they were. These souls were told to wait until all the killing was finished.

12 Then I watched while the Lamb opened the sixth seal. There was a great earthquake, and the sun became as black as sackcloth. The full moon became red like blood. 13 The stars in the sky fell to the earth like a fig tree dropping its figs when the wind blows. 14 The sky was split in the middle and both sides rolled up like a scroll. And every mountain and island was moved from its place.

15 Then all the people—the kings of the world, the rulers, the army commanders, the rich people, the powerful people, every slave, and every free person—hid themselves in caves and behind the rocks on the mountains. 16 They said to the mountains and the rocks, "Fall on us.

बैठे सवार के हाथ में एक तराजू थी। 6तभी मैंने उन चारों प्राणियों के बीच से एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, "एक दिन की मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेहूँ और एक दिन की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।"

7फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी को मैंने कहते सुना, "आ!" 8फिर जब मैंने दृष्टि उठायी तो मेरे सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित था। उस पर बैठे सवार का नाम था "मृत्यु" और उसके पीछे सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों, महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों को मार डालें।

9फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर के सुसन्देश के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं। 10ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, "हे पवित्र एवम् सच्चे प्रभु! हमारी हत्याएँ करने के लिए धरती के लोगों का न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिए तू कब तक प्रतीक्षा करता रहेगा? 11उनमें से हर एक को सफेद चोगा प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की गयी थी।

12फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा कि वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़ गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया है। 13आकाश के तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे किसी तेज आँधी द्वारा झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़ से कच्ची अंजीर गिरती है। 14आकाश फट पड़ा था और एक पुस्तक के समान सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप अपने-अपने स्थानों से डिग गये थे।

15संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी शक्तिशाली और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम् दास लोगों ने पहाड़ों पर चट्टानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा लिया था। 16वे पहाड़ों और चट्टानों से कह रहे थे, "हम पर गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा

Hide us from the face of the one who sits on the
throne. Hide us from the anger of the Lamb!
17 The great day for their anger has come. No
one can stand against it."

The 144,000 People of Israel

7 After this happened I saw four angels standing
at the four corners of the earth. The angels
were holding the four winds of the earth. They
were stopping the wind from blowing on the
land or the sea or on any tree. 2 Then I saw
another angel coming from the east. This angel
had the seal of the living God. The angel called
out in a loud voice to the four angels. These
were the four angels that God had given the
power to hurt the earth and the sea. The angel
said to them, 3 "Don't harm the land or the sea
or the trees before we mark the foreheads of
those who serve our God."

4 Then I heard how many people had God's
mark on their foreheads. There were 144,000.
They were from every tribe of the people of
Israel:

5	from the tribe of Judah	12,000
	from the tribe of Reuben	12,000
	from the tribe of Gad	12,000
6	from the tribe of Asher	12,000
	from the tribe of Naphtali	12,000
	from the tribe of Manasseh	12,000
7	from the tribe of Simeon	12,000
	from the tribe of Levi	12,000
	from the tribe of Issachar	12,000
8	from the tribe of Zebulun	12,000
	from the tribe of Joseph	12,000
	from the tribe of Benjamin	12,000

The Great Crowd

9 Then I looked, and there was a large crowd
of people. There were so many people that no
one could count them all. They were from every
nation, tribe, race of people, and language of the
earth. They were standing before the throne
and before the Lamb. They all wore white robes
and had palm branches in their hands. 10 They

लो। 17उनके क्रोध का भयंकर दिन आ पहुँचा है।
ऐसा कौन है जो इसे झेल सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000 लोग

7 इसके बाद धरती के चारों कोनों पर चार
स्वर्गदूतों को मैंने खड़े देखा। धरती की चारों
हवाओं को उन्होंने पकड़ा हुआ था ताकि धरती पर,
सागर पर अथवा वृक्षों पर उनमें से कोई सी भी
हवा चल ना पाये। 2फिर मैंने देखा कि एक और
स्वर्गदूत है जो पूर्व दिशा से आ रहा है। उसने
सजीव परमेश्वर की मुहर ली हुई थी। तथा वह उन
चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें धरती और आकाश को
नष्ट कर देने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे
स्वर में पुकार कर कह रहा था, 3"जब तक हम
अपने परमेश्वर के सेवकों के माथे पर मुहर नहीं
लगा देते, तब तक तुम धरती, सागर और वृक्षों
को हानि मत पहुँचाओ।"

4फिर जिन लोगों पर मुहर लगाई गई थी, मैंने
उनकी संख्या सुनी। वे एक लाख चवालीस हज़ार
थे। जिन पर मुहर लगाई गई थी, इस्राएल के सभी
परिवार समूहों से थे:

5	यहूदा के परिवार समूह के	12,000
	रूबेन के परिवार समूह के	12,000
	गाद परिवार समूह के	12,000
6	आशेर परिवार समूह के	12,000
	नप्ताली परिवार समूह के	12,000
	मनश्शे परिवार समूह के	12,000
7	शमौन परिवार समूह के	12,000
	लेवी परिवार समूह के	12,000
	इस्साकार परिवार समूह के	12,000
8	जबूलून परिवार समूह के	12,000
	यूसुफ़ परिवार समूह के	12,000
	बिन्यामीन परिवार समूह के	12,000

विशाल भीड़

9इसके बाद मैंने देखा कि मेरे सामने एक विशाल
भीड़ खड़ी थी जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता
था। इस भीड़ में हर जाति के हर वंश के, हर कुल के
तथा हर भाषा के लोग थे। वे उस सिंहासन और उस
मेमने के आगे खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे और
उन्होंने अपने हाथों में खजूर की टहनियाँ ली हुई थीं।
10वे पुकार रहे थे, "सिंहासन पर विराजमान हमारे
परमेश्वर की जय हो और मेमने की जय हो।"

shouted loudly, "Victory belongs to our God, who sits on the throne, and to the Lamb."

11 The elders and the four living beings were there. All the angels were standing around them and the throne. The angels bowed down on their faces before the throne and worshiped God. 12 They said, "Amen!* Praise, glory, wisdom, thanks, honor, power, and strength belong to our God forever and ever. Amen!"

13 Then one of the elders asked me, "Who are these people in white robes? Where did they come from?"

14 I answered, "You know who they are, sir."

And the elder said, "These are the ones who have come out of the great suffering. They have washed their robes with the blood of the Lamb, and they are clean and white. 15 So now these people are before the throne of God. They worship God day and night in his temple. And the one who sits on the throne will protect them. 16 They will never be hungry again. They will never be thirsty again. The sun will not hurt them. No heat will burn them. 17 The Lamb in front of the throne will be their shepherd. He will lead them to springs of water that give life. And God will wipe away every tear from their eyes."

The Seventh Seal

8 The Lamb opened the seventh seal. Then there was silence in heaven for about half an hour. 2 And I saw the seven angels who stand before God. They were given seven trumpets.

3 Another angel came and stood at the altar. This angel had a golden holder for incense. The angel was given much incense to offer with the prayers of all God's holy people. The angel put this offering on the golden altar before the throne. 4 The smoke from the incense went up from the angel's hand to God. The smoke went up with the prayers of God's people. 5 Then the angel filled the incense holder with fire from the altar

Amen A Hebrew word meaning "That's right," "True," or "Yes." It is used to express strong agreement with what has been said.

11सभी स्वर्गदूत सिंहासन प्राचीनों और उन चारों प्राणियों को घेरे खड़े थे। सिंहासन के सामने दण्डवत प्रणाम करके इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की उपासना की। 12उन्होंने कहा, "आमीन!* हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, विवेक, धन्यवाद, समादर, शक्ति और बल सदा-सर्वदा होते रहें। आमीन!"

13तभी उन प्राचीनों में से किसी ने मुझसे प्रश्न किया, "ये श्वेत वस्त्रधारी लोग कौन हैं तथा ये कहाँ से आए हैं?"

14मैंने उसे उत्तर दिया, "मेरे प्रभु तू तो जानता ही है।"

इस पर उसने मुझसे कहा, "ये वे लोग हैं जो कठोर यातनाओं के बीच से होकर आ रहे हैं उन्होंने अपने वस्त्रों को मेमने के लहू से धोकर स्वच्छ एवं उजला किया है। 15इसलिए अब ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े तथा उसके मन्दिर में दिन रात उसकी उपासना करते हैं। वह जो सिंहासन पर विराजमान है उनमें निवास करते हुए उनकी रक्षा करेगा। 16न कभी उन्हें भूख सताएगी और न ही वे फिर कभी प्यासे रहेंगे। सूरज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेगा और न ही चिलचिलाती धूप कभी उन्हें तपाएगी। 17क्योंकि वह मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी देखभाल करेगा। वह उन्हें जीवन देने वाले जल स्रोतों के पास ले जाएगा और परमेश्वर उनकी आँखों के हर आँसू को पोंछ देगा।"

सातवीं मुहर

8 फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी तो स्वर्ग में कोई आधा घण्टे तक सन्नाटा छाया रहा। 2फिर मैंने परमेश्वर के सामने खड़े होने वाले सात स्वर्गदूतों को देखा। उन्हें सात तुरहियाँ प्रदान की गईं थीं।

3फिर एक और स्वर्गदूत आया और वेदी पर खड़ा हो गया। उसके पास सोने का एक धूपदान था। उसे संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर जो सिंहासन के सामने थी, चढ़ाने के लिए बहुत सारी धूप दी गई। 4फिर स्वर्गदूत के हाथ से धूप का वह धुआँ संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ-साथ परमेश्वर के सामने पहुँचा। 5इसके बाद स्वर्गदूत ने उस धूपदान को उठाया, उसे वेदी की आग से भरा और उछाल कर धरती पर फेंक दिया। इस पर मेघों का गर्जन-तर्जन, भीषण शब्द, बिजली की चमक और भूकम्प होने लगे।

आमीन जब कोई व्यक्ति आमीन कहता है तो इसका अर्थ होता है कि वह पूरी तरह उसके साथ सहमत है।

and threw it down on the earth. Then there were flashes of lightning, thunder and other noises, and an earthquake.

The First of Seven Trumpet Blasts

6 Then the seven angels with the seven trumpets prepared to blow their trumpets.

7 The first angel blew his trumpet. Then hail and fire mixed with blood was poured down on the earth. And a third of the earth and all the green grass and a third of the trees were burned up.

8 The second angel blew his trumpet. Then something that looked like a big mountain burning with fire was thrown into the sea. And a third of the sea became blood. 9 And a third of the created beings in the sea died, and a third of the ships were destroyed.

10 The third angel blew his trumpet. Then a large star, burning like a torch, fell from the sky. It fell on a third of the rivers and on the springs of water. 11 The name of the star was Bitterness.* And a third of all the water became bitter. Many people died from drinking this bitter water.

12 The fourth angel blew his trumpet. Then a third of the sun and a third of the moon and a third of the stars were struck. So a third of them became dark. A third of the day and night was without light.

13 While I watched, I heard an eagle that was flying high in the air. The eagle said in a loud voice, "Terrible! Terrible! How terrible for those who live on the earth! The terrible trouble will begin after the sounds of the trumpets that the other three angels will blow."

The Fifth Trumpet Begins the First Terror

9 The fifth angel blew his trumpet. Then I saw a star fall from the sky to the earth. The star was given the key to the deep hole that leads down to the bottomless pit. 2 Then the star opened

8:11 ***Bitterness*** Literally, "Wormwood," a very bitter plant; here, it is a symbol of bitter sorrow.

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियाँ बजाना

6फिर वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थी, उन्हें फूँकने को तैयार हो गए।

7पहले स्वर्गदूत ने तुरही में जैसे ही फूँक मारी, वैसे ही लहू ओले और अग्नि एक साथ मिले जुले दिखाई देने लगे और उन्हें धरती पर नीचे उछाल कर फेंक दिया गया। जिससे धरती का एक तिहाई भाग जल कर भस्म हो गया। एक तिहाई पेड़ जल गए और समूची हरी घास राख हो गई।

8दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मानो अग्नि का जलता हुआ एक विशाल पहाड़ सा समुद्र में फेंक दिया गया हो। इससे एक तिहाई समुद्र रक्त में बदल गया। 9तथा समुद्र के एक तिहाई जीव-जन्तु मर गए और एक तिहाई जल पोत नष्ट हो गए।

10तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई तो आकाश से मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल तारा गिरा। यह तारा एक तिहाई नदियों तथा झरनों के पानी पर जा पड़ा। 11इस तारे का नाम था 'नागदौना'* सो समूचे जल का एक तिहाई भाग नागदौना में ही बदल गया। तथा उस जल के पीने से बहुत से लोग मारे गए। क्योंकि जल कड़वा हो गया था।

12जब चौथे स्वर्गदूत ने तूरही बजाई तो एक तिहाई सूर्य, और साथ में ही एक तिहाई चन्द्रमा और एक तिहाई तारों पर विपत्ति आई। सो उनका एक तिहाई काला पड़ गया। परिणामस्वरूप एक तिहाई दिन तथा उसी प्रकार एक तिहाई रात अन्धेरे में डूब गए।

13फिर मैंने देखा कि एक गरुड़ ऊँचे आकाश में उड़ रहा है। मैंने उसे ऊँचे स्वर में कहते हुए सुना, "उन बचे हुए तीन स्वर्गदूतों की तुरहियों के उद्घोष के कारण जो अपनी तुरहियाँ अभी बजाने ही वाले हैं, धरती के निवासियों पर कष्ट हो! कष्ट हो! कष्ट हो!

पाँचवीं तुरही, पहिला आतंक फैलाना

9 पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तब मैंने आकाश से धरती पर गिरा हुआ एक तारा देखा। इसे उस चिमनी की कुंजी दी गई थी जो पाताल में उतरती है। 2फिर उस तारे ने उस चिमनी का ताला खोल दिया जो पाताल में उतरती

8:11 नागदौना मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अंग्रेजी पर्याय है "वर्मवुड" जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिए इसे गहन दुःख का प्रतीक माना जाता है।

the hole leading to the pit. Smoke came up from the hole like smoke from a big furnace. The sun and sky became dark because of the smoke from the hole.

3 Then locusts came out of the smoke and went down to the earth. They were given the power to sting like scorpions. 4 They were told not to damage the fields of grass or any plant or tree. They were to hurt only those who did not have God's mark on their foreheads. 5 They were not given the power to kill them but only to cause them pain for five months—pain like a person feels when stung by a scorpion. 6 During those days people will look for a way to die, but they will not find it. They will want to die, but death will hide from them.

7 The locusts looked like horses prepared for battle. On their heads they wore something that looked like a gold crown. Their faces looked like human faces. 8 Their hair was like women's hair. Their teeth were like lions' teeth. 9 Their chests looked like iron breastplates. The sound their wings made was like the noise of many horses and chariots hurrying into battle. 10 The locusts had tails with stingers like scorpions. The power they had to give people pain for five months was in their tails. 11 They had a ruler, who was the angel of the bottomless pit. His name in Hebrew is Abaddon.* In Greek it is Apollyon.

12 The first terror is now past. There are still two other terrors to come.

The Sixth Trumpet Blast

13 The sixth angel blew his trumpet. Then I heard a voice coming from the horns on the four corners of the golden altar that is before God. 14 It said to the sixth angel who had the trumpet, "Free the four angels who are tied at the great

थी और चिमनी से वैसे ही धुआँ फूट पड़ा जैसे वह एक बड़ी भट्टी से निकलता है। सो चिमनी से निकले धुआँ से सूर्य और आकाश काले पड़ गए।

3तभी उस धुआँ से धरती पर टिड्डी दल उतर आया। उन्हें धरती के बिच्छुओं के जैसी शक्ति दी गई थी। 4किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे न तो धरती की घास को हानि पहुँचाए और न ही हरे पौधों या पेड़ों को। उन्हें तो बस उन लोगों को ही हानि पहुँचानी थी जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं लगी हुई थी। 5टिड्डी दल को निर्देश दे दिया गया था कि वे लोगों के प्राण न लें बल्कि पाँच महीने तक उन्हें पीड़ा पहुँचाते रहें। वह पीड़ा जो उन्हें पहुँचाई जा रही थी, वैसी थी जैसी किसी व्यक्ति को बिच्छू के काटने से होती है। 6उन पाँच महीनों के भीतर लोग मौत को ढूँढते फिरेंगे किन्तु मौत उन्हें मिल नहीं पाएगी। वे मरने के लिए तरसेंगे किन्तु मौत उन्हें चकमा देकर निकल जाएगी।

7और अब देखो कि वे टिड्डी युद्ध के लिए तैयार किए गए घोड़ों जैसी दिख रहीं थीं। उनके सिरों पर सुनहरी मुकुट से बँधे थे। उनके मुख मानव मुखों के समान थे। 8उनके बाल स्त्रियों के केशों के समान थे तथा उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे। 9उनके सीने ऐसे थे जैसे लोहे के कवच हों। उनके पंखों की ध्वनि युद्ध में जाते हुए असंख्य अश्व रथों से पैदा हुए शब्द के समान थी। 10उनकी पूँछों के बाल ऐसे थे जैसे बिच्छू के डंक हों। तथा उनमें लोगों को पाँच महीने तक क्षति पहुँचाने की शक्ति थी। 11पाताल के अधिकारी दूत को उन्होंने अपने राजा के रूप में लिया हुआ था। इब्रानी भाषा में उनका नाम है 'अबद्दोन'* और यूनानी भाषा में वह 'अपुल्लयोन' (अर्थात् विनाश करने वाला) कहलाता है।

12पहली महान विपत्ति तो बीत चुकी है किन्तु इसके बाद अभी दो बड़ी विपत्तियाँ आने वाली हैं।

छठवीं तुरही का बजना

13फिर छठे स्वर्गदूत ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी, वैसे ही मैंने परमेश्वर के सामने एक सुनहरी वेदी देखी, उसके चार सींगों से आती हुई एक ध्वनि सुनी। 14तुरही लिए हुए उस छठे स्वर्गदूत से उस आवाज़ ने कहा, "उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर

9:11 ***Abaddon*** A Hebrew name meaning "death" or "destruction." See Job 26:6 and Ps. 88:11.

9:11 अबद्दोन अर्थात् विनाश का स्थान। देखें अय्यूब 26:6 और भजन. 88:11

river Euphrates." 15 These four angels had been kept ready for this hour and day and month and year. The angels were set free to kill a third of all the people on the earth. 16 I heard how many troops on horses were in their army. There were 200,000,000.

17 In my vision, I saw the horses and the riders on the horses. They looked like this: They had breastplates that were fiery red, dark blue, and yellow like sulfur. The heads of the horses looked like heads of lions. The horses had fire, smoke, and sulfur coming out of their mouths. 18 A third of all the people on earth were killed by these three plagues coming out of the horses' mouths: the fire, the smoke, and the sulfur. 19 The horses' power was in their mouths and also in their tails. Their tails were like snakes that have heads to bite and hurt people.

20 The other people on earth were not killed by these plagues. But these people still did not change their hearts and turn away from worshiping the things they had made with their own hands. They did not stop worshiping demons and idols made of gold, silver, bronze, stone, and wood—things that cannot see or hear or walk. 21 They did not change their hearts and turn away from killing other people or from their evil magic, their sexual sins, and their stealing.

The Angel and the Little Scroll

10 Then I saw another powerful angel coming down from heaven. The angel was dressed in a cloud. He had a rainbow around his head. The angel's face was like the sun, and his legs were like poles of fire. 2 The angel was holding a small scroll. The scroll was open in his hand. He put his right foot on the sea and his left foot on the land. 3 He shouted loudly like the roaring of a lion. After he shouted, the voices of seven thunders spoke.

4 The seven thunders spoke, and I started to write. But then I heard a voice from heaven that said, "Don't write what the seven thunders said. Keep those things secret."

5 Then the angel I saw standing on the sea

दो जो फरात महानदी के पास बँधे पड़े हैं।" 15सो चारों स्वर्गदूत मुक्त कर दिए गए। वे उसी घड़ी, उसी दिन, उसी महीने और उसी वर्ष के लिए तैयार रखे गए थे ताकि वे एक तिहाई मानव जाति को मार डालें। 16उनकी पूरी संख्या कितनी थी, यह मैंने सुना। घुड़सवार सैनिकों की संख्या बीस करोड़ थी।

17उस मेरे दिव्य दर्शन में वे घोड़े और उनके सवार मुझे इस प्रकार दिखाई दिए: उन्होंने कवच धारण किए हुए थे जो धधकती आग जैसे लाल, गहरे नीले और गंधक जैसे पीले थे। 18इन तीन महाविनाशों से यानी उनके मुखों से निकल रही अग्नि, धुआँ और गंधक से एक तिहाई मानव जाति को मार डाला गया। 19इन घोड़ों की शक्ति उनके मुख और उनकी पूँछों में निहित थी क्योंकि उनकी पूँछें सिरदार साँपों के समान थी जिनका प्रयोग वे मनुष्यों को हानि पहुँचाने के लिए करते थे।

20इस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने जो इन महा विनाशों से भी नहीं मारे जा सके थे उन्होंने अपने हाथों से किए कामों के लिए अब भी मन न फिराया तथा भूत-प्रेतों की अथवा सोने, चाँदी, काँसे, पत्थर और लकड़ी की उन मूर्तियों की उपासना नहीं छोड़ी, जो न देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती हैं। 21उन्होंने अपने द्वारा की गई हत्याओं, जादू टोनों, व्यभिचारों अथवा चोरी-चकारी करने से मन न फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

10 फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते हुए एक और बलवान स्वर्गदूत को देखा। उसने बादल को ओढ़ा हुआ था तथा उसके सिर के आस-पास एक मेघ धनुष था। उसका मुखमण्डल सूर्य के समान तथा उसकी टाँगे अग्नि स्तम्भों के जैसी थीं। 2अपने हाथ में उसने एक छोटी सी खुली पोथी ली हुई थी। उसने अपना दाहिना चरण सागर में और बाँया चरण धरती पर रखा। 3फिर वह सिंह के समान दहाड़ता हुआ ऊँचे स्वर में चिल्लाया। उसके चिल्लाने पर सातों गर्जन-तर्जन के शब्द सुनाई देने लगे।

4जब सातों गर्जन हो चुके और मैं लिखने को ही था, तभी मैंने एक आकाशवाणी सुनी, "सातों गर्जनों ने जो कुछ कहा है, उसे छिपा ले तथा उसे लिख मत।"

5फिर उस स्वर्गदूत ने जिसे मैंने समुद्र में और

and on the land raised his right hand to heaven.
6 The angel made a promise by the power of
the one who lives forever and ever. He is the
one who made the skies and all that is in them.
He made the earth and all that is in it, and he
made the sea and all that is in it. The angel said,
"There will be no more waiting! 7 In the days
when the seventh angel is ready to blow his
trumpet, God's secret plan will be completed—
the Good News that God told to his servants, the
prophets."

8 Then I heard the same voice from heaven
again. It said to me, "Go and take the open
scroll that is in the angel's hand. This is the
angel who is standing on the sea and on the
land."

9 So I went to the angel and asked him to give
me the little scroll. He said to me, "Take the
scroll and eat it. It will be sour in your stomach,
but in your mouth it will be sweet like honey."
10 So I took the little scroll from the angel's hand
and ate it. In my mouth it tasted sweet like honey,
but after I ate it, it was sour in my stomach.
11 Then I was told, "You must prophesy again
about many races of people, many nations,
languages, and rulers."

The Two Witnesses

11 Then I was given a measuring rod as long
as a walking stick. I was told, "Go and
measure the temple of God and the altar, and
count the people worshiping there. 2 But don't
measure the yard outside the temple. Leave it
alone. It has been given to those who are not
God's people. They will show their power over
the holy city for 42 months. 3 And I will give
power to my two witnesses. And they will
prophesy for 1260 days. They will be dressed in
sackcloth."

4 These two witnesses are the two olive trees
and the two lampstands that stand before the
Lord of the earth. 5 If anyone tries to hurt the
witnesses, fire comes from the mouths of the
witnesses and kills their enemies. Anyone
who tries to hurt them will die like this.

धरती पर खड़े देखा था, आकाश में ऊपर दाहिना हाथ
उठाया। 6और जो नित्य रूप से सजीव है, जिसने
आकाश को तथा आकाश की सब वस्तुओं को, धरती
एवं धरती पर की तथा सागर और जो कुछ उसमें है,
उन सब की रचना की है, उसकी शपथ लेकर
कहा, "अब और अधिक देर नहीं होगी। 7किन्तु जब
सातवें स्वर्गदूत को सुनने का समय आएगा अर्थात्
जब वह अपनी तुरही बजाने को होगा तभी परमेश्वर
की वह गुप्त योजना पूरी हो जाएगी जिसे उसने
अपने सेवक नबियों को बता दिया था।"

8उस आकाशवाणी ने, जिसे मैंने सुना था, मुझसे
फिर कहा, "जा और उस स्वर्गदूत से जो सागर में
और धरती पर खड़ा है, उसके हाथ से उस खुली
पोथी को ले ले।"

9सो मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे कहा
कि वह उस छोटी पोथी को मुझे दे दे। उसने मुझसे कहा,
"यह ले और इसे खा जा। इससे तेरा पेट कड़वा हो
जाएगा किन्तु तेरे मुँह में यह शहद से भी ज्यादा मीठी
बन जाएगी।" 10फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से मैंने वह
छोटी सी पोथी ले ली और मैंने उसे खा लिया। मेरे मुख
में यह शहद सी मीठी लगी किन्तु मैं जब उसे खा चुका
तो मेरा पेट कड़वा हो गया। 11इस पर वह मुझसे
बोला, "तुझे बहुत से लोगों, राष्ट्रों, भाषाओं और
राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी।"

दो साक्षी

11 इसके पश्चात् नापन के लिए एक सरकंडा
मुझे दिया गया जो नापने की छड़ी जैसा दिख
रहा था। मुझसे कहा गया, "उठ और परमेश्वर के
मन्दिर तथा वेदी को नाप और जो लोग मन्दिर के भीतर
उपासना कर रहे हैं, उनकी गिनती कर। 2किन्तु मन्दिर
के बाहरी आँगन को रहने दे, उसे मत नाप क्योंकि यह
अधर्मियों को दे दिया गया है। वे बयालीस महीने तक
पवित्र नगर को अपने पैरों तले रौंदेंगे। 3मैं अपने दो
गवाहों को खुली छूट दे दूँगा और वो एक हज़ार दो सौ
साठ दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे। वे ऊन के ऐसे
वस्त्र धारण किए हुए होंगे जिन्हें शोक प्रदर्शित करने
के लिए पहना जाता है।"

4ये दो साक्षियाँ वे दो जैतून के पेड़ तथा वे दो
दीपदान हैं जो धरती के प्रभु के सामने स्थित रहते
हैं। 5यदि कोई भी उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो
उनके मुखों से ज्वाला फूट पड़ती है और उनके
शत्रुओं को निगल जाती है। सो यदि कोई उन्हें
हानि पहुँचाना चाहता है तो निश्चित रूप से उसकी
इस प्रकार मृत्यु हो जाती है।

6 These witnesses have the power to stop the
sky from raining during the time they are
prophesying. These witnesses have power to
make the water become blood. They have power
to send every kind of plague to the earth. They
can do this as many times as they want.
7 When the two witnesses have finished telling
their message, the beast will fight against them.
This is the beast that comes up from the bottomless
pit. It will defeat and kill them. 8 The bodies of
the two witnesses will lie in the street of the
great city. This city is named Sodom and Egypt.
These names for the city have a special meaning.
This is the city where the Lord was killed. 9 People
from every race of people, tribe, language, and
nation will look at the bodies of the two witnesses
for three and a half days. The people will refuse
to bury them. 10 Everyone on the earth will be
happy because these two are dead. They will have
parties and send each other gifts. They will do
this because these two prophets brought much
suffering to the people living on earth.
11 But after three and a half days, God let life
enter the two witnesses again. They stood on
their feet. All those who saw them were filled
with fear. 12 Then the two witnesses heard a
loud voice from heaven say, "Come up here!"
And both of them went up into heaven in a
cloud. Their enemies watched them go.
13 At that same time there was a great
earthquake. A tenth of the city was destroyed.
And 7000 people were killed in the earthquake.
Those who did not die were very afraid. They
gave glory to the God of heaven.
14 The second terror is now past. The third
terror is coming soon.

The Seventh Trumpet Blast

15 The seventh angel blew his trumpet. Then
there were loud voices in heaven. The voices
said,

"The kingdom of the world has now
become the kingdom of our Lord
and of his Messiah.
And he will rule forever and ever."

6वे आकाश को बाँध देने की शक्ति रखते हैं
ताकि जब वे भविष्यवाणी कर रहे हों, तब कोई
वर्षा न होने पाए। उन्हें झरनों के जल पर भी
अधिकार था जिससे वे उसे लहू में बदल सकते
थे। उनमें ऐसी शक्ति भी थी कि वे जितनी बार
चाहते, उतनी ही बार धरती पर हर प्रकार के
विनाशों का आघात कर सकते थे।
7उनके साक्षी दे चुकने के बाद, वह पशु उस
महागर्त से बाहर निकलेगा और उन पर आक्रमण
करेगा। वह उन्हें हरा देगा और मार डालेगा। 8उनकी
लाशें उस महानगर की गलियों में पड़ी रहेंगी। (यह
नगर प्रतीक रूप से सदोम तथा मिस्र कहलाता
है।) यहीं उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ा कर
मारा गया था। 9सभी जातियों, उपजातियों, भाषाओं
और देशों के लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन
तक देखते रहेंगे तथा वे उनके शवों को कब्रों में
नहीं रखने देंगे। 10धरती के वासी उन पर आनन्द
मनायेंगे। वे उत्सव करेंगे तथा परस्पर उपहार भेजेंगे।
क्योंकि इन दोनों नबियों ने धरती के निवासियों
को बहुत दुःख पहुँचाया था।
11किन्तु साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर
से उनमें जीवन के श्वास ने प्रवेश किया और वे
अपने पैरों पर खड़े हो गए। जिन्होंने उन्हें देखा, वे
बहुत डर गए थे। 12फिर उन दोनों नबियों ने ऊँचे
स्वर में आकाशवाणी को उनसे कहते हुए सुना,
"यहाँ ऊपर आ जाओ।" सो वे आकाश के भीतर
बादल में ऊपर चले गए। उन्हें ऊपर जाते हुए
उनके विरोधियों ने देखा।
13ठीक उसी क्षण वहाँ एक भारी भूचाल आया
और नगर का दसवाँ भाग ढह गया। भूचाल में
सात हज़ार लोग मारे गए तथा जो लोग बचे थे, वे
भयभीत हो उठे और वे स्वर्ग के परमेश्वर की
महिमा का बखान करने लगे।
14इस प्रकार अब दूसरी विपत्ति बीत गई है
किन्तु सावधान! तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आने
वाली है।

सातवीं तुरही का बजना

15सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तो
आकाश में तेज आवाज़ें होने लगीं। वे कह रही
थीं:

"अब जगत का राज्य हमारे प्रभु का है,
और उसके मसीह का ही।
अब वह सुशासन युगयुगों तक करेगा।"

16 Then the 24 elders bowed down on their
faces and worshiped God. These are the elders
who sit on their thrones before God. 17 The
elders said,

"We give thanks to you,
Lord God All-Powerful.
You are the one who is
and who always was.
We thank you because
you have used your great power
and have begun to rule.
18 The people of the world were angry,
but now is the time for your anger.
Now is the time for the dead to be judged.
It is time to reward your servants,
the prophets,
and to reward your holy people,
the people, great and small,
who respect you.
It is time to destroy those people
who destroy the earth!"

19 Then God's temple in heaven was opened.
The Box of the Agreement could be seen in his
temple. Then there were flashes of lightning,
noises, thunder, an earthquake, and a great
hailstorm.

The Woman Giving Birth and the Dragon

12 And then a great wonder appeared in
heaven: There was a woman who was
clothed with the sun, and the moon was under
her feet. She had a crown of twelve stars on her
head. 2 She was pregnant and cried out with
pain because she was about to give birth.

3 Then another wonder appeared in heaven:
There was a giant red dragon there. The dragon
had seven heads with a crown on each head. It
also had ten horns. 4 Its tail swept a third of the
stars out of the sky and threw them down to the
earth. It stood in front of the woman who was
ready to give birth to the baby. It wanted to eat
the woman's baby as soon as it was born.

5 The woman gave birth to a son, who would

16और तभी परमेश्वर के सामने अपने-अपने
सिंहासनों पर विराजमान चौबीसों प्राचीनों ने दण्डवत
प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना की। 17वे
बोले:

"हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, जो था,
हम तेरा धन्यवाद करते हैं।
तूने ही अपनी महाशक्ति को लेकर
सबके शासन का आरम्भ किया था।
18 अन्य जातियाँ क्रोध में भरी थी
किन्तु अब तेरा कोप प्रकट समय
और न्याय का समय आ गया।
उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे।
और समय आ गया कि तेरे सेवक
प्रतिफल पावें सभी नबी जन, तेरे सब जन
और सभी जो तुझको आदर देते।
और सभी जो छोटे जन हैं
और सभी जो बड़े बने हैं
अपना प्रतिफल पावें।
उन्हें मिटाने का समय आ गया,
धरती को जो मिटा रहे हैं।"

19फिर स्वर्ग में स्थित परमेश्वर के मन्दिर को
खोला गया तथा वहाँ मन्दिर में वाचा की वह पेटी
दिखाई दी। फिर बिजली की चकाचौंध होने लगी।
मेघों का गर्जन-तर्जन और घड़घड़ाहट के शब्द
भूकम्प और भयानक ओले बरसने लगे।

स्त्री और विशालकाय अजगर

12 इसके पश्चात् आकाश में एक बड़ा सा
संकेत प्रकट हुआ: एक महिला दिखाई दी
जिसने सूरज को धारण किया हुआ था और चन्द्रमा
उसके पैरों तले था। उसके माथे पर मुकुट था
जिसमें बारह तारे जड़े थे। 2वह गर्भवती थी। और
क्योंकि प्रसव होने ही वाला था इसलिए प्रजनन
की पीड़ा से वह कराह रही थी। 3स्वर्ग में एक और
संकेत प्रकट हुआ। मेरे सामने ही एक लाल रंग
का विशालकाय अजगर खड़ा था। उसके सातों
सिरों पर सात मुकुट थे। 4उसकी पूँछ ने आकाश
के तारों के एक तिहाई भाग को सपाटा मारकर
धरती पर नीचे फेंक दिया। वह स्त्री जो बच्चे को
जन्म देने ही वाली थी, वह अजगर उसके सामने
खड़ा हो गया ताकि वह जैसे ही उस बच्चे को
जन्म दे, वह उसके बच्चे को निगल जाए।

5फिर उस स्त्री ने एक बच्चे को जन्म दिया जो

rule all the nations with an iron rod. And her child was taken up to God and to his throne.
6 The woman ran away into the desert to a place that God had prepared for her. There she would be taken care of for 1260 days.

7 Then there was a war in heaven. Michael and his angels fought against the dragon. The dragon and its angels fought back, 8 but they were not strong enough. The dragon and its angels lost their place in heaven. 9 It was thrown down out of heaven. (This giant dragon is that old snake, the one called the devil or Satan, who leads the whole world into the wrong way.) The dragon and its angels were thrown to the earth.

10 Then I heard a loud voice in heaven say, "The victory and the power and the kingdom of our God and the authority of his Messiah have now come. These things have come, because the accuser of our brothers and sisters has been thrown out. He is the one who accused them day and night before our God. 11 They defeated him by the blood sacrifice of the Lamb and by the message of God that they told people. They did not love their lives too much. They were not afraid of death. 12 So rejoice, you heavens and all who live there! But it will be terrible for the earth and sea, because the devil has gone down to you. He is filled with anger. He knows he doesn't have much time."

13 The dragon saw that he had been thrown down to the earth. So he chased the woman who had given birth to the child. 14 But the woman was given the two wings of a great eagle. Then she could fly to the place that was prepared for her in the desert. There she would be taken care of for three and a half years. There she would be away from the dragon. 15 Then the dragon poured water out of its mouth like a river. It poured the water toward the woman so that the flood would carry her away. 16 But the earth helped the woman. The earth opened its mouth and swallowed the river that came from the mouth of the dragon. 17 Then the dragon was very angry with the woman. It went away to make war against all her other children. Her children are

एक लड़का था। उसे सभी जातियों पर लौह दण्ड के साथ शासन करना था। किन्तु उस बच्चे को उठाकर परमेश्वर और उसके सिंहासन के सामने ले जाया गया। 6और वह स्त्री निर्जन वन में भाग गई। एक ऐसा स्थान जो परमेश्वर ने उसी के लिए तैयार किया था ताकि वहाँ उसे एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक जीवित रखा जा सके।

7फिर स्वर्ग में एक युद्ध भड़क उठा। मीकाईल और उसके दूतों का उस विशालकाय अजगर से संग्राम हुआ। उस विशालकाय अजगर ने भी उसके दूतों के साथ लड़ाई लड़ी। 8किन्तु वह उन पर भारी नहीं पड़ सका, सो स्वर्ग में उनका स्थान उनके हाथ से निकल गया। 9और उस विशालकाय अजगर को नीचे धकेल दिया गया। यह वही पुराना महानाग है जिसे दानव अथवा शैतान कहा गया है। यह समूचे संसार को छलता रहता है। हाँ, इसे धरती पर धकेल दिया गया था।

10फिर मैंने ऊँचे स्वर में एक आकाशवाणी को कहते सुना: "यह हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी है। उसने अपनी शक्ति और संप्रभुता का बोध करा दिया है। उसके मसीह ने अपनी शक्ति को प्रकट कर दिया है क्योंकि हमारे बन्धुओं पर परमेश्वर के सामने दिन-रात लांछन लगाने वाले को नीचे धकेल दिया गया है। 11उन्होंने मेमने के बलिदान के रक्त और उनके द्वारा दी गई साक्षी से उसे हरा दिया है। उन्होंने अपने प्राणों का परित्याग करने तक अपने जीवन की परवाह नहीं की। 12सो हे स्वर्गों और स्वर्गों के निवासियों, आनन्द मनाओ। किन्तु हाय, धरती और सागर, तुम्हारे लिए कितना बुरा होगा क्योंकि शैतान अब तुम पर उतर आया है। वह क्रोध से आग-बबूला हो रहा है। क्योंकि वह जानता है कि अब उसका बहुत थोड़ा समय शेष है।"

13जब उस विशालकाय अजगर ने देखा कि उसे धरती पर नीचे धकेल दिया गया है तो उसने उस स्त्री का पीछा करना शुरू कर दिया जिसने पुत्र जना था। 14किन्तु उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिए गए ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाए, जो उसके लिए तैयार किया गया था। साढ़े तीन साल तक वहीं उस विशालकाय अजगर से दूर उसका भरण-पोषण किया जाना था। 15तब उस महानाग ने उस स्त्री के पीछे अपने मुख से नदी के समान जल धारा प्रवाहित की ताकि वह उसमें बह कर डूब जाए। 16किन्तु धरती ने अपना मुख खोलकर उस स्त्री की सहायता की और उस विशालकाय अजगर ने अपने मुख से जो नदी निकाली थी, उसे निगल लिया। 17इसके बाद तो

those who obey God's commands and have the truth that Jesus taught.

18 The dragon stood on the seashore.

The Beast From the Sea

13 Then I saw a beast coming up out of the sea. It had ten horns and seven heads. There was a crown on each of its horns. It had an evil name written on each head. 2 This beast looked like a leopard, with feet like a bear's feet. It had a mouth like a lion's mouth. The dragon gave the beast all of its power and its throne and great authority.

3 One of the heads of the beast looked as if it had been wounded and killed, but the death wound was healed. All the people in the world were amazed, and they all followed the beast. 4 People worshiped the dragon because it had given its power to the beast, and they also worshiped the beast. They asked, "Who is as powerful as the beast? Who can make war against it?"

5 The beast was allowed to boast and speak insults against God. It was allowed to use its power for 42 months. 6 The beast opened its mouth to insult God—to insult his name, the place where he lives, and all those who live in heaven. 7 It was given power to make war against God's holy people and to defeat them. It was given power over every tribe, race of people, language, and nation. 8 Everyone living on earth would worship the beast. These are all the people since the beginning of the world whose names are not written in the Lamb's book of life. The Lamb is the one who was killed.

9 Anyone who hears these things should listen to this:

10 Whoever is to be a prisoner,
will be a prisoner.
Whoever is to be killed with a sword,
will be killed with a sword.

This means that God's holy people must have patience and faith.

वह विशालकाय अजगर उस स्त्री पर बहुत क्रोधित हो उठा और उसके उन वंशजों के साथ जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और यीशु की साक्षी को धारण करते हैं, युद्ध करने को निकल पड़ा।

18तथा सागर के किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

13 फिर मैंने सागर में से एक पशु को बाहर आते देखा। उसके दस सींग थे और सात सिर थे। तथा अपने सीगों पर उसने दस राजसी मुकुट पहने हुए थे। उसके सिरों पर दुष्ट नाम अंकित थे। 2मैंने जो पशु देखा था, वह चीते जैसा था। उसके पैर भालू के पैर जैसे थे और उसका मुख सिंह के मुख के समान था। उस विशालकाय अजगर ने अपनी शक्ति, अपना सिंहासन और अपना प्रचुर अधिकार उसे सौंप दिया।

3मैंने देखा कि उसका एक सिर ऐसा दिखाई दे रहा था जैसे उस पर कोई घातक घाव लगा हो किन्तु उसका वह घातक घाव भर चुका था। समूचा संसार आश्चर्य चकित होकर उस पशु के पीछे हो लिया। 4तथा वे उस विशालकाय अजगर को पूजने लगे। क्योंकि उसने अपना समूचा अधिकार उस पशु को दे दिया था। वे उस पशु की भी उपासना करते हुए कहने लगे, "इस पशु के समान कौन है? और ऐसा कौन है जो उससे लड़ सके?"

5उसे अनुमति दे दी गई कि वह अहंकार पूर्ण तथा निन्दा से भरे शब्द बोलने में अपने मुख का प्रयोग करे। उसे बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के प्रयोग का अधिकार दिया गया। 6सो उसने परमेश्वर की निन्दा करना आरम्भ कर दिया। वह परमेश्वर के नाम और उसके मन्दिर तथा जो स्वर्ग में रहते हैं, उनकी निन्दा करने लगा। 7परमेश्वर के संत जनों के साथ युद्ध करने और उन्हें हराने की अनुमति उसे दे दी गई। तथा हर वंश, हर जाति, हर परिवारसमूह, हर भाषा और हर देश पर उसे अधिकार दिया गया। 8धरती के वे सभी निवासी उस पशु की उपासना करेंगे जिनके नाम उस मेमने की जीवन-पुस्तक में संसार के आरम्भ से ही नहीं लिखे जिसका बलिदान किया जाना सुनिश्चित है।

9यदि किसी के कान हैं तो वह सुने:

10 बंदीगृह में बंदी होना, जिसकी नियति
बनी है वह निश्चय ही बंदी होगा।
यदि कोई असि से मारेगा तो
वह भी उस ही असि से मारा जाएगा।

इसी में तो परमेश्वर के संत जनों से धैर्यपूर्ण सहनशीलता और विश्वास की अपेक्षा है।

The Beast From the Earth

11 Then I saw another beast coming up out of
the earth. He had two horns like a lamb, but he
talked like a dragon. 12 This beast stood before
the first beast and used the same power the first
beast had. He used this power to make everyone
living on the earth worship the first beast. The
first beast was the one that had the death wound
that was healed. 13 The second beast did great
miracles. He even made fire come down from
heaven to earth while people were watching.
14 This second beast fooled the people living
on earth by using the miracles that he had been
given the power to do for the first beast. He
ordered people to make an idol to honor the first
beast, the one that was wounded by the sword
but did not die. 15 The second beast was given
power to give life to the idol of the first beast.
Then the idol could speak and order all those
who did not worship it to be killed. 16 The second
beast also forced all people, small and great, rich
and poor, free and slave, to have a mark put on
their right hand or on their forehead. 17 No one
could buy or sell without this mark. (This mark is
the name of the beast or the number of its
name.)
18 Anyone who has understanding can find
the meaning of the beast's number. This requires
wisdom. This number is the number of a man. It
is 666.

God's People Sing a New Song

14 Then I looked, and there before me was
the Lamb, who was standing on Mount
Zion. There were 144,000 people with him.
They all had his name and his Father's name
written on their foreheads.
2 And I heard a sound from heaven as loud as
the crashing of floodwaters or claps of thunder.
But it sounded like harpists playing their harps.
3 The people sang a new song before the throne
and before the four living beings and the elders.
The only ones who could learn the new song
were the 144,000 who had been bought from
the earth. No one else could learn it.

धरती से पशु का निकलना

11इसके पश्चात् मैंने धरती से निकलते हुए एक
और पशु को देखा। उसके मेमने के सींगों जैसे दो सींग
थे। किन्तु वह एक महानाग के समान बोलता था।
12उस विशालकाय अजगर के सामने वह पहले पशु
के सभी अधिकारों का उपयोग करता था। उसने धरती
और धरती पर सभी रहने वालों से उस पहले पशु की
उपासना करवाई जिसका घातक घाव भर चुका था।
13दूसरे पशु ने बड़े-बड़े चमत्कार किए। यहाँ तक कि
सभी लोगों के सामने उसने धरती पर आकाश से आग
बरसवा दी।
14वह धरती के निवासियों को छलता चला गया
क्योंकि उसके पास पहले पशु की उपस्थिति में चमत्कार
दिखाने की शक्ति थी। दूसरे पशु ने धरती के निवासियों
से उस पहले पशु को आदर देने के लिए जिस पर
तलवार का घाव लगा था और जो ठीक हो गया था,
उसकी मूर्ति बनाने को कहा। 15दूसरे पशु को यह
शक्ति दी गई थी कि वह पहले पशु की मूर्ति में प्राण
प्रतिष्ठा करे ताकि पहले पशु की वह मूर्ति न केवल
बोल सके बल्कि उन सभी को मार डालने का आदेश
भी दे सके जो इस मूर्ति की उपासना नहीं करते।
16-17दूसरे पशु ने छोटों-बड़ों, धनियों-निर्धनों, स्वतन्त्रों
और दासों-सभी को विवश किया कि वे अपने-अपने
दाहिने हाथों या माथों पर उस पशु के नाम या उसके
नामों से सम्बन्धित संख्या की छाप लगवायें ताकि उस
छाप को धारण किए बिना कोई भी ले बेच न कर सके।
18जिसमें बुद्धि हो, वह उस पशु के अंक का हिसाब
लगा ले क्योंकि वह अंक किसी व्यक्ति के नाम से
सम्बन्धित है। उसका अंक है छः सौ छियासठ।

मुक्त जनों का गीत

14 फिर मैंने देखा कि मेरे सामने सिय्योन
पर्वत पर मेमना खड़ा है। उसके साथ ही
एक लाख चवालीस हज़ार वे लोग भी खड़े थे जिनके
माथों पर उसका और उसके पिता का नाम अंकित
था।
2फिर मैंने एक आकाशवाणी सुनी, उसका महा नाद
एक विशाल जल प्रपात के समान था या घनघोर मेघ
गर्जन के जैसा था। जो महानाद मैंने सुना था, वह अनेक
वीणा वादकों द्वारा एक साथ बजायी गई वीणाओं से
उत्पन्न संगीत के समान था। 3वे लोग सिंहासन, चारों
प्राणियों तथा प्राचीनों के सामने एक नया गीत गा रहे थे।
जिन एक लाख चवालीस हज़ार लोगों को धरती पर
फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था उन्हें छोड़
अन्य कोई भी व्यक्ति उस गीत को नहीं सीख सकता था।

4 These are the ones who did not do sinful
things with women. They kept themselves pure.
Now they follow the Lamb wherever he goes.
They were bought from among the people of the
earth as the first to be offered to God and the
Lamb. 5 They are not guilty of telling lies; they
are without fault.

The Three Angels

6 Then I saw another angel flying high in the
air. The angel had the eternal Good News to
announce to the people living on earth—to every
nation, tribe, language, and race of people. 7 The
angel said in a loud voice, "Fear God and give
him praise. The time has come for God to judge
all people. Worship God. He made the heavens,
the earth, the sea, and the springs of water."

8 Then the second angel followed the first
angel and said, "She is destroyed! The great city
of Babylon is destroyed! She made all the nations
drink the wine of her sexual sin and of God's
anger."

9 A third angel followed the first two angels.
This third angel said in a loud voice, "God will
punish all those who worship the beast and the
beast's idol and agree to have the beast's mark on
their forehead or on their hand. 10 They will
drink the wine of God's anger. This wine is
prepared with all its strength in the cup of God's
anger. They will be tortured with burning sulfur
before the holy angels and the Lamb. 11 And the
smoke from their burning pain will rise forever
and ever. There will be no rest, day or night, for
those who worship the beast and its idol or who
wear the mark of its name." 12 This means that
God's holy people must be patient. They must
obey God's commands and keep their faith in
Jesus.

13 Then I heard a voice from heaven. It said,
"Write this: From now on there are great blessings
for those who belong to the Lord when they
die."

The Spirit says, "Yes, that is true. They will
rest from their hard work. What they have done
will stay with them."

4वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने किसी स्त्री के संसर्ग
से अपने आपको दूषित नहीं किया था। क्योंकि वे
कुंवारे थे जहाँ कहीं मेमना जाता, वे उसका अनुसरण
करते। सारी मानव जाति से उन्हें फिरौती देकर
बन्धन से छुड़ा लिया गया था। वे परमेश्वर और
मेमने के लिए फसल के पहले फल थे। 5उन्होंने
कभी झूठ नहीं बोला था, वे निर्दोष थे।

तीन स्वर्गदूत

6फिर मैंने आकाश में ऊँची उड़ान भरते एक
और स्वर्गदूत को देखा। उसके पास धरती के
निवासियों, प्रत्येक देश, जाति, भाषा और कुल के
लोगों के लिए सुसमाचार का एक अनन्त सन्देश
था। 7ऊँचे स्वर में वह बोला, "परमेश्वर से डरो
और उसकी स्तुति करो। क्योंकि उसके न्याय करने
का समय आ गया है। उसकी उपासना करो,
जिसने आकाश, पृथ्वी, सागर और जल-स्रोतों की
रचना की है।"

8इसके पश्चात् उसके पीछे एक और स्वर्गदूत
आया और बोला, "उसका पतन हो चुका है, महान
नगरी बाबुल का पतन हो चुका है। उसने सभी
जातियों को अपने व्यभिचार से उत्पन्न क्रोध की
वासनामय मदिरा पिलायी थी।"

9उन दोनों के पश्चात् फिर एक और स्वर्गदूत आया
और ऊँचे स्वर में बोला, "यदि कोई उस पशु और
उसकी मूर्ति की उपासना करता है और अपने हाथ या
माथे पर उसका छाप धारण करता है, 10तो वह परमेश्वर
के प्रकोप की मदिरा पीएगा। ऐसी अमिश्रित तीखी
मदिरा जो परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे में तैयार की
गयी है। उस व्यक्ति को पवित्र स्वर्गदूतों और मेमने से
सामने धधकती हुई गंधक में यातनाएँ दी जायेंगी।
11युग-युगान्तर तक उनकी यातनाओं से धूआँ उठता
रहेगा। और जिस किसी पर भी पशु के नाम की छाप
अंकित होगी और जो उसकी और उसकी मूर्ति की
उपासना करता होगा, उन्हें रात-दिन कभी चैन नहीं
मिलेगा।" 12इसी स्थान पर परमेश्वर के उन संत जनों
की धैर्यपूर्ण सहनशीलता की अपेक्षा है जो परमेश्वर
की आज्ञाओं और यीशु में अपने विश्वास का पालन
करती है।

13फिर एक आकाशवाणी को मैंने यह कहते
सुना, "इसे लिख अब से आगे वे ही लोग धन्य
होगें जो प्रभु में स्थित हो कर मरे हैं।"

आत्मा कहती है, "हाँ, यही ठीक है। उन्हें अपने
परिश्रम से अब विश्राम मिलेगा क्योंकि उनके कर्म,
उनके साथ हैं।"

The Earth Is Harvested

14 I looked and there before me, sitting on a
white cloud, was one who looked like the Son of
Man.* He had a gold crown on his head and a sharp
sickle in his hand. 15 Then another angel came out
of the temple. This angel called to the one who was
sitting on the cloud, "Take your sickle and gather
from the earth. The time to harvest has come, and
the fruit on the earth is ripe." 16 So the one who
was sitting on the cloud swung his sickle over the
earth. And the earth was harvested.

17 Then another angel came out of the temple
in heaven. This angel also had a sharp sickle.
18 And then another angel, one with power over
the fire, came from the altar. He called to the
angel with the sharp sickle and said, "Take your
sharp sickle and gather the bunches of grapes
from the earth's vine. The earth's grapes are
ripe." 19 The angel swung his sickle over the
earth. He gathered the earth's grapes and threw
them into the great winepress of God's anger.
20 The grapes were squeezed in the winepress
outside the city. Blood flowed out of the winepress.
It rose as high as the heads of the horses for a
distance of 200 miles.

The Angels With the Last Plagues

15 Then I saw another wonder in heaven. It
was great and amazing. There were seven
angels bringing seven plagues. These are the
last plagues, because after these, God's anger is
finished.

2 I saw what looked like a sea of glass mixed
with fire. All those who had won the victory
over the beast and his idol and over the number
of its name were standing by the sea. These
people had harps that God had given them. 3 They
sang the song of Moses, the servant of God, and
the song of the Lamb:

Son of Man The name that Jesus most often used for himself. The phrase in Hebrew or Aramaic means "human being" or "mankind," but in Dan. 7:13-14 it is used of a future savior and king, and this was later understood to be the Messiah, the one God would send to save his people.

धरती की फसल की कटनी

14फिर मैंने देखा कि मेरे सामने वहाँ एक सफेद
बादल था। और उस बादल पर एक व्यक्ति बैठा था जो
मनुष्य के पुत्र* जैसा दिख रहा था। उसने सिर पर एक
स्वर्णमुकुट धारण किया हुआ था और उसके हाथ में
एक तेज हँसिया था। 15तभी मन्दिर में से एक और
स्वर्गदूत बाहर निकला। उसने जो बादल पर बैठा था,
उससे ऊँचे स्वर में कहा, "हँसिया चला और फसल
इकट्ठी कर क्योंकि फसल काटने का समय आ
पहुँचा है। धरती की फसल पक चुकी है।" 16सो जो
बादल पर बैठा था, उसने धरती पर अपना हँसिया
चलाया तथा धरती की फसल काट ली गयी।

17फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से एक और
स्वर्गदूत बाहर निकला। उसके पास भी एक तेज हँसिया
था। 18तभी वेदी से एक और स्वर्गदूत आया। अग्नि पर
उसका अधिकार था। उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में
कहा, "अपने तेज हँसिये का प्रयोग कर और धरती की
बेल से अंगूर के गुच्छे उतार ले क्योंकि इसके अंगूर
पक चुके हैं।" 19सो उस स्वर्गदूत ने धरती पर अपना
हँसिया चलाया और धरती के अंगूर उतार लिए और
उन्हें परमेश्वर के भयंकर कोप की कुण्ड में डाल
दिया। 20अंगूर नगर के बाहर की धानी में रौंद कर
निचोड़ लिए गए। धानी में से लहू बह निकला। लहू
घोड़े की लगाम जितना ऊपर चढ़ आया और कोई
तीन सौ किलो मीटर की दूरी तक फैल गया।

अंतिम विनाश के दूत

15 आकाश में फिर मैंने एक और महान
एवम् अदभुत चिन्ह देखा। मैंने देखा कि
सात दूत हैं जो सात अंतिम महाविनाशों को लिए
हुए हैं। ये अंतिम विनाश हैं क्योंकि इनके साथ
परमेश्वर का कोप भी समाप्त हो जाता है।

2फिर मुझे काँच का एक सागर सा दिखायी
दिया जिसमें मानो आग मिली हो। और मैंने देखा
कि उन्होंने उस पशु की मूर्ति पर तथा उसके नाम
से सम्बन्धित संख्या पर विजय पा ली है, वे भी
उस काँच के सागर पर खड़े हैं। उन्होंने परमेश्वर के
द्वारा दी गयी वीणाएँ ली हुई थीं। 3वे परमेश्वर के
सेवक मूसा और मेमने का यह गीत गा रहे थे:

मनुष्य का पुत्र यीशु स्वयं अपने लिए प्राय: इस नाम का प्रयोग करते थे। इस मुहावरा का इब्रानी या अरामी में अर्थ होता है, "मानव" या "मानव-जाति!" परन्तु दानिय्येल 7:13-14 में इस शब्द का प्रयोग भविष्य का उद्धारकर्ता और राजा के लिए किया गया। बाद में इस शब्द को "मसीह" समझा गया।

"Great and wonderful are
the things you do,
Lord God All-Powerful.
Right and true are your ways,
Ruler of the nations.
4 All people will fear you, O Lord.
All people will praise your name.
Only you are holy.
All people will come and worship
before you, because it is clear
that you do what is right."

5 After this I saw the temple, the holy place of God's presence, in heaven. It was opened, 6 and the seven angels bringing the seven plagues came out. They were dressed in clean, shining linen cloth. They wore golden bands tied around their chests. 7 Then one of the four living beings gave seven golden bowls to the seven angels. The bowls were filled with the anger of God, who lives forever and ever. 8 The temple was filled with smoke from the glory and the power of God. No one could enter the temple until the seven plagues of the seven angels were finished.

The Bowls Filled With God's Anger

16 Then I heard a loud voice from the temple. It said to the seven angels, "Go and pour out the seven bowls of God's anger on the earth."

2 The first angel left. He poured out his bowl on the land. Then all those who had the mark of the beast and who worshiped its idol got sores that were ugly and painful.

3 The second angel poured out his bowl on the sea. Then the sea became blood like a dead man's blood. And everything living in the sea died.

4 The third angel poured out his bowl on the rivers and the springs of water. The rivers and the springs of water became blood. 5 Then I heard the angel of the waters say to God,

"You are the one who is and
who always was.
You are the Holy One.
You are right in these judgments
you have made.

"वे कर्म जिन्हें तू करता रहता, महान है।
तेरे कर्म अदभुत, तेरी शक्ति अनन्त है।
हे प्रभु परमेश्वर, तेरे मार्ग सच्चे
और धार्मिकता से भरे हुए हैं,
सभी जातियों का राजा।
4 हे प्रभु, तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे।
तेरा नाम लेकर सब जन स्तुति करेंगे,
क्योंकि तू मात्र ही पवित्र है।
सभी जातियाँ तेरे सम्मुख उपस्थित हुई
तेरी उपासना करें।
क्योंकि तेरे कार्य प्रकट हैं,
हे प्रभु तू जो करता वही न्याय है।"

5इसके पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग के मन्दिर अर्थात् वाचा के तम्बू को खोला गया 6और वे सातों दूत जिनके पास अंतिम सात विनाश थे, मन्दिर से बाहर आये। उन्होंने चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र पहने हुए थे। अपने सीनों पर सोने के पटके बाँधे हुए थे। 7फिर उन चार प्राणियों में से एक ने उन सातों दूतों को सोने के कटोरे दिए जो सदा-सर्वदा के लिए अमर परमेश्वर के कोप से भरे हुए थे। 8वह मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी शक्ति के धुएँ से भरा हुआ था ताकि जब तक उन सात दूतों के सात विनाश पूरे न हो जायें, तब तक मन्दिर में कोई भी प्रवेश न करने पाये।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

16 फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से एक ऊँचा स्वर उन सात दूतों से कह रहा है, "जाओ और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को धरती पर उँड़ेल दो।"

2सो पहला दूत गया और उसने धरती पर अपना प्याला उँड़ेल दिया। परिणामस्वरूप उन लोगों के, जिन पर उस पशु का चिन्ह अंकित था और जो उसकी मूर्ति को पूजते थे, भयानक पीड़ापूर्ण छाले फूट आये।

3इसके पश्चात् दूसरे दूत ने अपना कटोरा समुद्र पर उँड़ेल दिया और सागर का जल मरे हुए व्यक्ति के लहू के रूप में बदल गया और समुद्र में रहने वाले सभी जीवजन्तु मारे गए।

4फिर तीसरे दूत ने नदियों और जल झरनों पर अपना कटोरा उँड़ेल दिया। और वे लहू में बदल गए 5तभी मैंने जल के स्वामी स्वर्गदूत को यह कहते सुना:

"वह तू ही है जो न्यायी है,
जो था सदा-सदा से, तू ही है जो पवित्र।
तूने जो किया है वह न्याय है।

6 The people have spilled
the blood of your holy people
and your prophets.
Now you have given those
people blood to drink.
This is what they deserve."

7 And I heard the altar say,

"Yes, Lord God All-Powerful,
your judgments are true and right."

8 The fourth angel poured out his bowl on the sun. The sun was given power to burn the people with fire. 9 The people were burned by the great heat. They cursed the name of God, who had control over these plagues. But they refused to change their hearts and lives and give glory to God.

10 The fifth angel poured out his bowl on the throne of the beast. And darkness covered the beast's kingdom. People bit their tongues because of the pain. 11 They cursed the God of heaven because of their pain and the sores they had. But they refused to change their hearts and turn away from the evil things they did.

12 The sixth angel poured out his bowl on the great river Euphrates. The water in the river was dried up. This prepared the way for the rulers from the east to come. 13 Then I saw three evil spirits that looked like frogs. They came out of the mouth of the dragon, out of the mouth of the beast, and out of the mouth of the false prophet. 14 These evil spirits are the spirits of demons. They have power to do miracles. They go out to the rulers of the whole world to gather them for battle on the great day of God All-Powerful.

15 "Listen! I will come at a time you don't expect, like a thief. Great blessings belong to those who stay awake and keep their clothes with them. They will not have to go without clothes and be ashamed for people to see them."

16 Then the evil spirits gathered the rulers together to the place that in Hebrew is called Armageddon.

17 The seventh angel poured out his bowl into

6 उन्होंने संत जनों का
और नबियों का लहू बहाया।
तू न्यायी है तूने उनके पीने
को बस रक्त ही दिया,
क्योंकि वे इसी के योग्य रहे।"

7फिर मैंने वेदी से आते हुए ये शब्द सुने:

"हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
तेरे न्याय सच्चे और नेक हैं।"

8फिर चौथे दूत ने अपना प्याला सूरज पर उँड़ेल दिया। सो उसे लोगों को आग से जला डालने की शक्ति प्रदान कर दी गयी। 9और लोग भयानक गर्मी से झुलसने लगे। उन्होंने परमेश्वर के नाम को कोसा क्योंकि इन विनाशों पर उसी का नियन्त्रण है। किन्तु उन्होंने कोई मन न फिराया और न ही उसे महिमा प्रदान की।

10इसके पश्चात् पाँचवे दूत ने अपना प्याला उस पशु के सिंहासन पर उँड़ेल दिया और उस का राज्य अंधकार में डूब गया। लोगों ने पीड़ा के मारे अपनी जीभ काट ली। 11अपनी-अपनी पीड़ाओं और छालों के कारण उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर की भर्त्सना तो की, किन्तु अपने कर्मो के लिए मन न फिराया।

12फिर छठे दूत ने अपना कटोरा फरात नामक महानदी पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया। इससे पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो गया। 13फिर मैंने देखा कि उस विशालकाय अजगर के मुख से, उस पशु के मुख से और कपटी नबियों के मुख से तीन दुष्टात्माएँ निकलीं, जो मेंढक के समान दिख रहीं थी। 14ये शैतानी दुष्ट आत्माएँ थीं और उनमें चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। वे समूचे संसार के राजाओं को परम शक्तिमान परमेश्वर के महान दिन, युद्ध करने के लिए एकत्र करने को निकल पड़ी।

15"सावधान! मैं दबे पाँव आकर तुम्हें अचरज में डाल दूँगा। वह धन्य है जो जागता रहता है, और अपने वस्त्रों को अपने साथ रखता है ताकि वह नंगा न फिरे और लोग उसे लज्जित होते न देखें।"

16इस प्रकार वे दुष्टात्माएँ उन राजाओं को इकट्ठा करके उस स्थान पर ले आई, जिसे इब्रानी भाषा में हरमगिदोन कहा जाता है।

17इसके बाद सातवें दूत ने अपना प्याला हवा में उँड़ेल दिया और सिंहासन से उत्पन्न हुई एक घनघोर

the air. Then a loud voice came out of the temple from the throne. It said, "It is finished!" [18] Then there were flashes of lightning, noises, thunder, and a big earthquake. This was the worst earthquake that has ever happened since people have been on earth. [19] The great city split into three parts. The cities of the nations were destroyed. And God did not forget to punish Babylon the Great. He gave that city the cup filled with the wine of his terrible anger. [20] Every island disappeared and there were no more mountains. [21] Giant hailstones fell on the people from the sky. These hailstones weighed almost 100 pounds each. People cursed God because of this plague of the hail. It was terrible.

ध्वनि मन्दिर में से यह कहती निकली, "यह समाप्त हो गया।" [18]तभी बिजली कौंधने लगी, गड़गड़ाहट और मेघों का गर्जन-तर्जन होने लगा तथा एक बड़ा भूचाल भी आया। मनुष्य के इस धरती पर प्रकट होने के बाद का यह सबसे भयानक भूचाल था।

[19]वह महान् नगरी तीन टुकड़ों में बिखर गयी तथा अधर्मियों के नगर ध्वस्त हो गए। परमेश्वर ने बाबुल की महानगरी को दण्ड देने के लिए याद किया था। ताकि वह उसे अपने भभकते क्रोध की मदिरा से भरे प्याले को उसे दे दे। [20]सभी द्वीप लुप्त हो गए। किसी पहाड़ तक का पता नहीं चल पा रहा था। [21]चालीस चालीस किलो के ओले, आकाश से लोगों पर पड़ रहे थे। ओलों के इस महाविनाश के कारण लोग परमेश्वर को कोस रहे थे क्योंकि यह एक भयानक विपत्ति थी।

The Woman on the Red Beast

17 One of the seven angels came and spoke to me. This was one of the angels that had the seven bowls. The angel said, "Come, and I will show you the punishment that will be given to the famous prostitute. She is the one sitting over many waters. [2] The rulers of the earth sinned sexually with her. The people of the earth became drunk from the wine of her sexual sin."

[3] Then the angel carried me away by the Spirit to the desert. There I saw a woman sitting on a red beast. The beast was covered with evil names. It had seven heads and ten horns. [4] The woman was dressed in purple and red. She was shining with the gold, jewels, and pearls that she was wearing. She had a golden cup in her hand. This cup was filled with terribly evil things and the filth of her sexual sin. [5] She had a title written on her forehead. This title has a hidden meaning. This is what was written:

the great babylon
mother of prostitutes
and the evil things of the earth

[6] I saw that the woman was drunk. She was drunk with the blood of God's holy people. She was drunk with the blood of those who told about their faith in Jesus.

पशु पर बैठी स्त्री

17 इसके बाद उन सात दूतों में से जिनके पास सात कटोरे थे, एक मेरे पास आया और बोला, "आ, मैं तुझे बहुत सी नदियों के किनारे बैठी उस महान वेश्या के दण्ड को दिखाऊँगा। [2]धरती के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है और वे जो धरती पर रहते हैं वे उसकी व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए।"

[3]फिर मैं आत्मा से भावित हो उठा और वह दूत मुझे बीहड़ वन में ले गया जहाँ मैंने एक स्त्री को लाल रंग के एक ऐसे पशु पर बैठे देखा जो परमेश्वर के प्रति अपशब्दों से भरा था। उसके सात सिर थे और दस सींग। [4]उस स्त्री ने बैजनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। वह सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सजी हुई थी। वह अपने हाथ में सोने का एक कटोरा लिए हुए थी जो बुरी बातों और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ था। [5]उसके माथे पर एक प्रतीकात्मक शीर्षक था:

महान बाबुल
वेश्याओं और धरती पर की
सभी अश्लीलताओं की जननी।

[6]मैंने देखा कि उस स्त्री ने संत जनों और उन व्यक्तियों के लहू पीने से मतवाली हुई है। जिन्होंने यीशु के प्रति अपने विश्वास की साक्षी को लिए हुए अपने प्राण त्याग दिए।

When I saw the woman, I was fully amazed.
7 Then the angel said to me, "Why are you
amazed? I will tell you the hidden meaning of
this woman and the beast she rides—the beast
with seven heads and ten horns. 8 The beast you
saw was once alive, but now it is not. However,
it will come up out of the bottomless pit and go
away to be destroyed. The people who live on
the earth will be amazed when they see the
beast, because it was once alive, is no longer
living, but will come again. These are the people
whose names have never been written in the
book of life since the beginning of the world.
9 "You need wisdom to understand this. The
seven heads on the beast are the seven hills
where the woman sits. They are also seven
rulers. 10 Five of the rulers have already died.
One of the rulers lives now, and the last ruler is
coming. When he comes, he will stay only a
short time. 11 The beast that was once alive but is
no longer living is an eighth ruler. This eighth
ruler also belongs to the first seven rulers. And
he will go away to be destroyed.
12 "The ten horns you saw are ten rulers.
These ten rulers have not yet received their
kingdom, but they will receive power to rule
with the beast for one hour. 13 All ten of these
rulers have the same purpose. And they will
give their power and authority to the beast. 14 They
will make war against the Lamb. But the Lamb
will defeat them, because he is Lord of lords and
King of kings. And with him will be his chosen
and faithful followers—the people he has called
to be his."
15 Then the angel said to me, "You saw the
waters where the prostitute sits. These waters
are the many peoples, the different races, nations,
and languages in the world. 16 The beast and the
ten horns you saw will hate the prostitute. They
will take everything she has and leave her naked.
They will eat her flesh and destroy her with
fire. 17 God put the idea in their minds to do
what would complete his purpose. They agreed
to give the beast their power to rule until what
God has said is completed. 18 The woman you

उसे देखकर मैं बड़े अचरज में पड़ गया। 7तभी
उस दूत ने मुझसे पूछा, "तुम अचरज में क्यों पड़े
हो? मैं तुम्हें इस स्त्री के और जिस पशु पर वह
बैठी है, उसके प्रतीक को समझाता हूँ। सात सिरों
और दस सीगों वाला यह पशु 8जो तुमने देखा है,
पहले कभी जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है।
फिर भी वह पाताल से अभी निकलने वाला है।
और तभी उसका विनाश हो जायेगा। फिर धरती
के वे लोग जिन के नाम सृष्टि के प्रारम्भ से ही
जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं, उस पशु
को देखकर चकित होंगे क्योंकि कभी वह जीवित
था, किन्तु अब जीवित नहीं है, पर फिर भी वह
आने वाला है।
9"यही वह बिन्दू है जहाँ विवेकशील बुद्धि की
आवश्यकता है। ये सात सिर, वे सात पर्वत हैं,
जिन पर वह स्त्री बैठी है। वे सात सिर, उन सात
राजाओं के भी प्रतीक हैं, 10जिनमें से पहले पाँच
का पतन हो चुका है, एक अभी भी राज्य कर रहा
है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है। किन्तु जब
वह आएगा तो उसकी यह नियति है कि वह कुछ
देर ही टिक पाएगा। 11वह पशु जो पहले कभी
जीवित था, किन्तु अब जीवित नहीं है, स्वयं आठवाँ
राजा है जो उन सातों में से ही एक है, उसका भी
विनाश होने वाला है।
12"जो दस सींग तुमने देखे हैं, वे दस राजा हैं,
उन्होंने अभी अपना शासन आरम्भ नहीं किया है परन्तु
पशु के साथ घड़ी भर राज्य करने को उन्हें अधिकार
दिया जाएगा। 13इन दसों राजाओं का एक ही प्रयोजन
है कि वे अपनी शक्ति और अपना अधिकार उस पशु
को सौंप दें। 14वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे किन्तु
मेमना अपने बुलाए हुओं, चुने हुओं और अनुयायियों
के साथ उन्हें हरा देगा। क्योंकि वह राजाओं का
राजा और प्रभुओं का प्रभु है।"
15उस दूत ने मुझसे फिर कहा, "वे नदियाँ जिन्हें
तुमने देखा था, जहाँ वह वेश्या बैठी थी, विभिन्न
कुलों, समुदायों, जातियों और भाषाओं की प्रतीक
है। 16वे दस सींग जिन्हें तुमने देखा, और वह पशु
उस वेश्या से घृणा करेंगे तथा उससे सब कुछ छीन
कर उसे नंगा छोड़ जायेंगे। वे शरीर को खा जायेंगे
और उसे आग में जला डालेंगे। 17अपने प्रयोजन
को पूरा कराने के लिए परमेश्वर ने उन सब को
एक मत करके, उनके मन में यही बैठा दिया है कि
वे, जब तक परमेश्वर के वचन पूरे नहीं हो जाते,
तब तक शासन करने का अपना अधिकार उस
पशु को सौंप दें। 18वह स्त्री जो तुमने देखी थी, वह

saw is the great city that rules over the kings of the earth."

Babylon Is Destroyed

18 Then I saw another angel coming down from heaven. This angel had great power. The angel's glory made the earth bright. 2 The angel shouted with a powerful voice,

"She is destroyed!
The great city of Babylon is destroyed!
She has become a home for demons.
That city has become a place
for every unclean spirit to live.
She is a city filled with all kinds
of unclean birds.
She is a place where every unclean
and hated animal lives.
3 All the peoples of the earth have
drunk the wine of her sexual sin
and of God's anger.
The rulers of the earth sinned
sexually with her,
and the merchants of the world grew rich
from the great wealth of her luxury."

4 Then I heard another voice from heaven say,

"Come out of that city, my people,
so that you will not share in her sins.
Then you will not suffer any of the
terrible punishment she will get.
5 That city's sins are piled up
as high as heaven.
God has not forgotten the wrongs
she has done.
6 Give that city the same as she gave to others.
Pay her back twice as much as she did.
Prepare wine for her that is twice
as strong as the wine she prepared
for others.
7 She gave herself much glory and rich living.
Give her that much suffering and sadness.
She says to herself,
'I am a queen sitting on my throne.

महानगरी थी, जो धरती के राजाओं पर शासन करती है।"

बाबुल का विनाश

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश से बड़ी शक्ति के साथ नीचे उतरते देखा। उसकी महिमा से सारी धरती प्रकाशित हो उठी। 2शक्तिशाली स्वर से पुकारते हुए वह बोला:

"वह मिट गयी, बाबुल नगरी मिट गयी।
वह दानवों का आवास बन गयी थी।
हर किसी दुष्टात्मा का वह
बसेरा बन गयी थी।
हर किसी घृणित पक्षी का
वह बसेरा बन गयी थी!
हर किसी अपवित्र, निन्दा-योग्य पशु का।
3 क्योंकि उसने सब जनों को व्यभिचार के
क्रोध की मदिरा पिलायी थी।
इस जगत के शासकों ने जो स्वयं
जगाई थी उससे व्यभिचार किया था।
और उसके भोग व्यय से जगत के
व्यापारी सम्पन्न बने थे।"

4आकाश से मैंने एक और स्वर सुना जो कह रहा था:

"हे मेरे जनों, तुम वहाँ से बाहर निकल आओ
तुम उसके पापों में कहीं साक्षी न बन जाओ;
कहीं ऐसा न हो, तुम पर ही
वे नाश गिरें जो उसके रहे थे,
5 क्योंकि उसके पाप की ढेरी बहुत
ऊँची गगन तक है।
परमेश्वर उसके बुरे कर्मों को
याद कर रहा है।
6 हे! तुम भी तो उससे ठीक वैसा
व्यवहार करो जैसा तुम्हारे साथ
उसने किया था।
जो उसने तुम्हारे साथ किया
उससे दुगुना उसके साथ करो।
दूसरों के हेतु उसने जिस कटोरे में
मदिरा मिलाई वही मदिरा
तुम उसके हेतु दुगनी मिलाओ।
7 क्योंकि जो महिमा और वैभव उसने
स्वयं को दिया तुम उसी ढँग से
उसे यातनाएँ और पीड़ा दो क्योंकि

I am not a widow;
I will never be sad.'
8 So in one day she will suffer
great hunger, mourning, and death.
She will be destroyed by fire,
because the Lord God who judges
her is powerful.

9 "The rulers of the earth who sinned sexually with her and shared her wealth will see the smoke from her burning. Then they will cry and be sad because of her death. 10 The rulers will be afraid of her suffering and stand far away. They will say,

'Terrible! How terrible, O great city,
O powerful city of Babylon!
Your punishment came in one hour!'

11 "And the merchants of the earth will cry and be sad for her. They will be sad because now there is no one to buy the things they sell— 12 gold, silver, jewels, pearls, fine linen cloth, purple cloth, silk, and scarlet cloth, all kinds of citron wood, and all kinds of things made from ivory, expensive wood, bronze, iron, and marble. 13 They also sell cinnamon, spice, incense, frankincense, myrrh, wine, olive oil, fine flour, wheat, cattle, sheep, horses, carriages, and slaves—yes, even human lives. The merchants will cry and say,

14 'O Babylon, the good things
you wanted have left you.
All your rich and fancy things
have disappeared.
You will never have them again.'

15 "The merchants will be afraid of her suffering and will stand far away from her. They are the ones who became rich from selling those things to her. They will cry and be sad. 16 They will say,

'Terrible! How terrible for the great city!
She was dressed in fine linen;
she wore purple and scarlet cloth.

वह स्वयं अपने आप ही से कहती रही है,
'मैं अपनी नृपासन विराजित महारानी
मैं विधवा नहीं फिर शोक क्यों करूँगी?'
8 इसलिए वे नाश जो महामृत्यु,
महारोदन और वह दुर्भिक्ष भीषण है।
उसको एक ही दिन घेर लेंगे,
और उसको जला कर भस्म कर
देंगे क्योंकि परमेश्वर प्रभु जो बहुत सक्षम है,
उसी ने इसका यह न्याय किया है।

9"जब धरती के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार किया और उसके भोग-विलास में हिस्सा बटाया, उसके जलने से निकलते धुआँ को देखेंगे तो वे उसके लिए रोयेंगे और विलाप करेंगे। 10वे उसके कष्टों से डर कर वहीं से बहुत दूर ही खड़े हुए कहेंगे:

'हे! शक्तिशाली नगर बाबुल!
भयावह ओ, हाय भयानक!
तेरा दण्ड तुझको बस घड़ी भर में मिल गया।'

11"इस धरती पर के व्यापारी भी उसके कारण रोयेंगे और विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएँ अब कोई और मोल नहीं लेगा, 12वस्तुएँ-सोने की, चाँदी की, बहुमूल्य रत्न, मोती, मलमल, बैजनी, रेशमी और किरमिजी वस्त्र, हर प्रकार की सुगंधित लकड़ी हाथी दाँत की बनी हुई हर प्रकार की वस्तुएँ, अनमोल लकड़ी, काँसे, लोहे और संगमरमर से बनी हुई तरह-तरह की वस्तुएँ 13दार चीनी, गुलमेंहदी, सुगंधित धूप, रस गंध, लोहबान, मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़े, घोड़े और रथ, दास, हाँ, मनुष्यों की देह और उनकी आत्माएँ तक।

14 'हे बाबुल! वे सभी उत्तम वस्तुएँ,
जिनमें तेरा हृदय रमा था,
तुझे सब छोड़ चली गयी हैं।
तेरा सब विलास वैभव भी आज नहीं है।
अब न कभी वे तुझे मिलेंगी।'

15"वे व्यापारी जो इन वस्तुओं का व्यापार करते थे और उससे सम्पन्न बन गए थे, वे दूर-दूर ही खड़े रहेंगे क्योंकि वे उसके कष्टों से डर गये हैं। वे रोते-बिलखते 16कहेंगे:

'कितना भयावह और कितना भयानक है,
महानगरी! यह उसके हेतु हुआ।

She was shining with gold,
jewels, and pearls!
17 All these riches have been
destroyed in one hour!'

"Every sea captain, all those who travel on ships, the sailors, and all those who earn money from the sea stood far away from Babylon. 18 They saw the smoke from her burning. They cried out, 'There was never a city like this great city!' 19 They threw dust on their heads and cried loudly to show the deep sorrow they felt. They said,

'Terrible! How terrible for the great city!
All those who had ships on the sea
became rich because of her wealth!
But she has been destroyed in one hour!
20 Be happy because of this, O heaven!
Be happy, God's holy people
and apostles and prophets!
God has punished her because of
what she did to you.'"

21 Then a powerful angel picked up a large rock. This rock was as big as a large millstone. The angel threw the rock into the sea and said,

"That is how the great city of Babylon
will be thrown down.
It will never be found again.
22 O Babylon, the music of people
playing harps and other instruments,
flutes and trumpets, will never be
heard in you again.
No worker doing any job will ever be
found in you again.
The sound of a millstone will never be
heard in you again.
23 The light of a lamp will never
shine in you again.
The voices of a bridegroom
and bride will never be
heard in you again.
Your merchants were the

उत्तम मलमली वस्त्र पहनती थी
बैजनी किर और मिजी!
और स्वर्ण से बहुमूल्य रत्नों से सुसज्जित
मोतियों से सजती ही रही थी।
17 और बस घड़ी भर में यह
सारी सम्पत्ति मिट गयी।'

"फिर जहाज का हर कप्तान, या हर वह व्यक्ति जो जहाज से चाहे कहीं भी जा सकता है तथा सभी मल्लाह और वे सब लोग भी जो सागर से अपनी जीविका चलाते हैं, उस नगरी से दूर ही खड़े रहे 18और जब उन्होंने उसके जलने से उठती धुआँ को देखा तो वे पुकार उठे, 'इस विशाल नगरी के समान और कौन सी नगरी है?' 19फिर उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए रोते-बिलखते कहा,

'महानगरी! हाय यह कितना भयावह!
हाय यह कितना भयानक!
जिनके पास जलयान थे,
सिंधु जल पर सम्पत्तिशाली बन गए,
क्योंकि उसके पास सम्पत्ति थी पर
अब बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी।
20 उसके हेतु आनन्द मनाओ तुम हे स्वर्ग!
प्रेरित! और नबियों!
तुम परमेश्वर के जनों आनन्द मनाओ!
क्योंकि प्रभु ने उसको ठीक वैसा
दण्ड दे दिया है जैसा वह दण्ड
उसने तुम्हें दिया था।
21 फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने चक्की के पाट जैसी एक बड़ी सी चट्टान उठाई और उसे सागर में फेंकते हुए कहा,

"महानगरी!
हे बाबुल महानगरी! ठीक ऐसे ही
तू गिरा दी जायेगी तू फिर लुप्त हो जायेगी,
और तू नहीं मिल पायेगी।
22 तुझमें फिर कभी नहीं वीणा बजेगी,
और गायक कभी भी स्तुति पाठ
न कर पायेंगे। वंशी कभी नहीं गूँजेंगी
कोई भी तुरही तान न सुनेगा,
तुझमें अब कोई कला शिल्पी कभी न मिलेगा
अब तुझमें कोई भी कला न बचेगी!
अब चक्की पीसने का स्वर
कभी भी ध्वनित न होगा।
23 दीप की किंचित किरण तुझमें कभी
भी न चमकेगी, अब तुझमें किसी

world's great people.
All the nations were tricked
by your magic.
24 You are guilty of the death of the prophets,
of God's holy people,
and of all those who have
been killed on earth."

People in Heaven Praise God

19 After this I heard what sounded like a large crowd of people in heaven. The people were saying,

"Hallelujah!
Victory, glory, and power belong to our God.
2 His judgments are true and right.
Our God has punished the prostitute.
She is the one who ruined
the earth with her sexual sin.
God has punished the prostitute to pay her
back for the death of his servants."

3 These people also said,

"Hallelujah!
She is burning and her smoke
will rise forever and ever."

4 Then the 24 elders and the four living beings bowed down. They worshiped God, who sits on the throne. They said,

"Amen! Hallelujah!"

5 Then a voice came from the throne and said,

"Praise our God,
all you who serve him!
Praise our God, all you small
and great who honor him!"

6 Then I heard something that sounded like a large crowd of people. It was as loud as crashing waves or claps of thunder. The people were saying,

वर की किसी वधु की मधुर ध्वनि
कभी न गुँजेगी।
तेरे व्यापारी जगती के महामनुज
थे तेरे जादू ने सब जातों को भरमाया।
24 नगरी ने नबियों का संत जनों का
उन सब ही का लहू बहाया था।
इस धरती पर जनको बलि पर चढ़ा दिया था।"

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

19 इसके पश्चात् मैंने भीड़ का सा एक ऊँचा स्वर सुना। लोग कह रहे थे:

"हल्लिलूय्याह! परमेश्वर की जय हो,
जय हो! महिमा और सामर्थ्य सदा हो!
2 उसके न्याय सदा सच्चे हैं, धर्म युक्त हैं,
उस महती वेश्या का उसने न्याय किया है,
जिसने अपने व्यभिचार से
इस धरती को भ्रष्ट किया था
जिनको उसने मार दिया
उन दास जनों की हत्या का
प्रतिशोध हो चुका।"

3 उन्होंने यह फिर गाया:

"हल्लिलूय्याह! जय हो उसकी
उससे धुआँ युग युग उठेगा।"

4 फिर चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया और उसकी उपासना करते हुए गाने लगे:

"आमीन! हल्लिलूय्याह!" जय हो उसकी।

5 स्वर्ग से फिर एक आवाज़ आयी जो कह रही थी:

"हे उसके सेवकों,
तुम सभी हमारे परमेश्वर का स्तुति
गान करो तुम चाहे छोटे हो,
चाहे बड़े बने हो, जो उससे
डरते रहते हो।"

6 फिर मैंने एक बड़े जनसमुद्र का सा शब्द सुना जो एक विशाल जलप्रवाह और मेघों के शक्तिशाली गर्जन-तर्जन जैसा था। लोग गा रहे थे:

"Hallelujah!
Our Lord God rules.
He is the All-Powerful.
7 Let us rejoice and be happy
and give God glory!
Give God glory, because the wedding
of the Lamb has come.
And the Lamb's bride has made
herself ready.
8 Fine linen was given to the bride
for her to wear.
The linen was bright and clean."
(The fine linen means the good things that God's holy people did.)

9 Then the angel said to me, "Write this: Great blessings belong to those who are invited to the wedding meal of the Lamb!" Then the angel said, "These are the true words of God."

10 Then I bowed down before the angel's feet to worship him. But the angel said to me, "Don't worship me! I am a servant like you and your brothers and sisters who have the truth of Jesus. So worship God! Because the truth of Jesus is the spirit of prophecy."

The Rider on the White Horse

11 Then I saw heaven open. There before me was a white horse. The rider on the horse was called Faithful and True, because he is right in his judging and in making war. 12 His eyes were like burning fire. He had many crowns on his head. A name was written on him, but he was the only one who knew its meaning. 13 He was dressed in a robe dipped in blood, and he was called the Word of God. 14 The armies of heaven were following the rider on the white horse. They were also riding white horses. They were dressed in fine linen, white and clean. 15 A sharp sword came out of the rider's mouth, a sword that he would use to defeat the nations. And he will rule the nations with a rod of iron. He will crush the grapes in the winepress of the terrible anger of God All-Powerful. 16 On his robe and on his leg was written this name:

king of kings and lord of lords

" हल्लिलूय्याह! उसकी जय हो,
क्योंकि हमारा प्रभु परमेश्वर!
सर्वशक्ति सम्पन्न राज्य कर रहा है।
7 सो आओ, खुश हो-हो कर आनन्द
मनाएँ आओ, उसको महिमा देवें!
क्योंकि अब मेमने के ब्याह का समय
आ गया उसकी दुल्हन सजी-धजी
तैयार हो गयी।
8 उसको अनुमति मिली स्वच्छ धवल
पहन ले वह निर्मल मलमल!"

(यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक है।)

9फिर वह मुझसे कहने लगा, "लिखो वे धन्य हैं जिन्हें इस विवाह भोज में बुलाया गया है।" उसने फिर कहा, "ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

10और मैं उसकी उपासना करने के लिए उसके चरणों में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, "सावधान! ऐसा मत कर। मैं तो तेरे और तेरे बधुंओं के साथ परमेश्वर का संगी सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा साक्षी दिए गए सन्देश के प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर की उपासना कर क्योंकि यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश इस बात का प्रमाण है कि उनमें एक नबी की आत्मा है।"

सफेद घोड़े का सवार

11फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार 'विश्वसनीय' और 'सत्य' कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह निर्णय करता है और युद्ध करता है। 12उसकी आँखें ऐसी थीं मानों अग्नि की लपट हो। उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे। उस पर एक नाम लिखा था, जिसे उसके अतिरिक्त कोई और नहीं जानता। 13उसने ऐसा वस्त्र पहना था जिसे लहू में डुबाया गया था। उसे नाम दिया गया था, "परमेश्वर का वचन।" 14सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएँ उसके पीछे पीछे चल रही थीं। उन्होंने शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र पहने थे। 15अधर्मियों पर प्रहार करने के लिए उसके मुख से एक तेज धार की तलवार बाहर निकल रही थी। वह उन पर लोहे के दण्ड से शासन करेगा और सर्वशक्ति सम्पन्न परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में वह अंगूरों का रस निचोड़ेगा। 16उसके वस्त्र तथा उसकी जाँघ पर लिखा था:

राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु

17 Then I saw an angel standing in the sun. In
a loud voice the angel said to all the birds flying
in the sky, "Come together for the great supper
of God. 18 Come together so that you can eat the
bodies of rulers and army commanders and
famous men. Come to eat the bodies of the horses
and their riders and the bodies of all people—
free, slave, small, and great."
19 Then I saw the beast and the rulers of the
earth. Their armies were gathered together to
make war against the rider on the horse and his
army. 20 But the beast was captured, and the false
prophet was also captured. He was the one who
did the miracles for the beast. He had used these
miracles to trick those who had the mark of the
beast and worshiped its idol. The false prophet
and the beast were thrown alive into the lake of
fire that burns with sulfur. 21 Their armies were
killed with the sword that came out of the mouth
of the rider on the horse. All the birds ate these
bodies until they were full.

The 1000 Years

20 I saw an angel coming down out of heaven.
The angel had the key to the bottomless
pit. The angel also held a large chain in his
hand. 2 The angel grabbed the dragon, that old
snake, also known as the devil or Satan. The
angel tied the dragon with the chain for 1000
years. 3 Then the angel threw the dragon into
the bottomless pit and closed it. The angel locked
it over the dragon. The angel did this so that the
dragon could not trick the people of the earth
until the 1000 years were ended. After 1000
years the dragon must be made free for a short
time.
4 Then I saw some thrones and people sitting
on them. These were the ones who had been
given the power to judge. And I saw the souls of
those who had been killed because they were
faithful to the truth of Jesus and the message
from God. They did not worship the beast or its
idol. They did not receive the mark of the beast
on their foreheads or on their hands. They came
back to life and ruled with Christ for 1000 years.

17इसके बाद मैंने देखा कि सूर्य के ऊपर एक
स्वर्गदूत खड़ा है। उसने ऊँचे आकाश में उड़ने वाले
सभी पक्षियों से ऊँचे स्वर में कहा, "आओ, परमेश्वर
के महाभोज के लिए एकत्र हो जाओ, 18ताकि तुम
शासकों, सेनापतियों, प्रसिद्ध पुरुषों, घोड़ों और उनके
सवारों का माँस खा सको। और सभी लोगों स्वतन्त्र
व्यक्तियों, सेवकों छोटे लोगों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों
की देहों को खा सको।"
19फिर मैंने उस पशु को और धरती के राजाओं
को देखा। उनके साथ उनकी सेना थी। वे उस
घुड़सवार और उसकी सेना से युद्ध करने के लिए
एक साथ आ जुटे थे। 20पशु को घेर लिया गया
था। उसके साथ वह झूठा नबी भी था जो उसके
सामने चमत्कार दिखाया करता था और उनको
छला करता था जिन पर उस पशु की छाप लगी
थी और जो उसकी मूर्ति की उपासना किया करते
थे। उस पशु और झूठे नबी दोनों को ही जलते
गंधक की भभकती झील में जीवित ही डाल दिया
गया था। 21घोड़े के सवार के मुख से जो तलवार
निकल रही थी, बाकी के सैनिक उससे मार डाले
गए फिर पक्षियों ने उनके शवों के माँस को भर पेट
खाया।

हज़ार वर्ष

20 फिर आकाश से मैंने एक स्वर्गदूत को
नीचे उतरते देखा। उसके हाथ में पाताल
की चाबी और एक बड़ी साँकल थी। 2उसने उस
पुराने महा सर्प को पकड़ लिया जो दैत्य यानी
शैतान है फिर एक हज़ार वर्ष के लिए उसे साँकल
से बाँध दिया। 3तब उस स्वर्गदूत ने उसे महागर्त में
धकेल कर ताला लगा दिया और उस पर कपाट
लगा कर मुहर लगा दी ताकि जब तक हज़ार
साल पूरे न हो जायें वह लोगों को धोखा न दे
सके। हज़ार साल पूरे होने के बाद थोड़े समय के
लिए उसे छोड़ा जाना है।
4फिर मैंने कुछ सिंहासन देखे जिन पर कुछ
लोग बैठे थे। उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया
गया था। और मैंने उन लोगों की आत्माओं को
देखा जिनके सिर, उस सत्य के कारण, जो यीशु
द्वारा प्रमाणित है, और परमेश्वर के संदेश के कारण
काटे गए थे, जिन्होंने उस पशु या उसकी प्रतिमा
की कभी उपासना नहीं की थी। तथा जिन्होंने
अपने माथों पर या अपने हाथों पर उसका संकेत
चिन्ह धारण नहीं किया था। वे फिर से जीवित हो
उठे और उन्होंने मसीह के साथ एक हज़ार वर्ष

5 (The rest of the dead did not live again until
the 1000 years were ended.)

This is the first resurrection. 6 Great blessings
belong to those who share in this first
resurrection. They are God's holy people. The
second death has no power over them. They will
be priests for God and for Christ. They will rule
with him for 1000 years.

The Defeat of Satan

7 When the 1000 years are ended, Satan will
be made free from his prison. 8 He will go out to
trick the nations in all the earth, the nations
known as Gog and Magog. Satan will gather
the people for battle. There will be more
people than anyone can count, like sand on the
seashore.

9 I saw Satan's army march across the earth
and gather around the camp of God's people and
the city that God loves. But fire came down from
heaven and destroyed Satan's army. 10 And he
(the one who tricked these people) was thrown
into the lake of burning sulfur with the beast and
the false prophet. There they would be tortured
day and night forever and ever.

People of the World Are Judged

11 Then I saw a large white throne. I saw the
one who was sitting on the throne. Earth and
sky ran away from him and disappeared. 12 And I
saw those who had died, great and small,
standing before the throne. Some books were
opened. And another book was opened—the
book of life. The people were judged by what
they had done, which is written in the books.

13 The sea gave up the dead who were in it.
Death and Hades gave up the dead who were in
them. All these people were judged by what they
had done. 14 And Death and Hades were thrown
into the lake of fire. This lake of fire is the
second death. 15 And anyone whose name was
not found written in the book of life was thrown
into the lake of fire.

तक राज्य किया। 5(शेष लोग हज़ार वर्ष पूरे होने
तक फिर से जीवित नहीं हुए।)

यह पहला पुनरुत्थान है। 6वह धन्य है और
पवित्र भी है जो पहले पुनरुत्थान में भाग ले रहा
है। इन व्यक्तियों पर दूसरी मृत्यु को कोई अधिकार
प्राप्त नहीं है। बल्कि वे तो परमेश्वर और मसीह के
अपने याजक होंगे और उसके साथ एक हज़ार वर्ष
तक राज्य करेंगे।

शैतान की हार

7फिर एक हज़ार वर्ष पूरे हो चुकने पर शैतान को
उसके बन्दीगृह से छोड़ दिया जाएगा। 8और वह
समूची धरती पर फैली जातियों को छलने के लिए
निकल पड़ेगा। वह गोग और मागोग को छलेगा। वह
उन्हें युद्ध के लिए एकत्र करेगा। वे उतने ही अनगिनत
होंगे जितने समुद्र तट के रेत-कण।

9शैतान की सेना समूची धरती पर फैल जायेगी
और वे संत जनों के डेरे और प्रिय नगरी को घेर लेंगे।
किन्तु आग उतरेगी और उन्हें निगल जाएगी, 10इस के
पश्चात् उस शैतान को जो उन्हें छलता रहा है
भभकती गंधक की झील में फेंक दिया जाएगा जहाँ
वह पशु और झूठे नबी, दोनों ही डाले गए हैं। सदा-
सदा के लिए उन्हें रात दिन तड़पाया जाएगा।

संसार के लोगों का न्याय

11फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन को और
उसे जो उस पर विराजमान था, देखा। उसके सामने
से धरती और आकाश भाग खड़े हुए। उनका पता
तक नहीं चल पाया। 12फिर मैंने छोटे और बड़े
मृतकों को देखा। वे सिंहासन के आगे खड़े थे।
कुछ पुस्तकें खोली गयीं। फिर एक और पुस्तक
खोली गयी। यही 'जीवन की पुस्तक' है। उन कर्मों
के अनुसार जो पुस्तकों में लिखे गए थे, मृतकों का
न्याय किया गया।

13जो मृतक सागर में थे, उन्हें सागर ने दे दिया, तथा
मृत्यु और पाताल ने भी अपने अपने मृतक सौंप दिए।
प्रत्येक का न्याय उसके कर्मों के अनुसार किया गया।
14इसके बाद मृत्यु को और पाताल को आग की झील
में झोंक दिया गया। यह आग की झील ही दूसरी मृत्यु
है। 15यदि किसी का नाम 'जीवन की पुस्तक' में
लिखा नहीं मिला, तो उसे भी आग की झील में धकेल
दिया गया।

The New Jerusalem

21 Then I saw a new heaven and a new
earth. The first heaven and the first earth
had disappeared. Now there was no sea. 2 And I
saw the holy city, the new Jerusalem, coming
down out of heaven from God. It was prepared
like a bride dressed for her husband.

3 I heard a loud voice from the throne. It said,
"Now God's home is with people. He will live
with them. They will be his people. God himself
will be with them and will be their God. 4 He
will wipe away every tear from their eyes. There
will be no more death, sadness, crying, or pain.
All the old ways are gone."

5 The one who was sitting on the throne said,
"Look, I am making everything new!" Then he
said, "Write this, because these words are true
and can be trusted."

6 The one on the throne said to me, "It is
finished! I am the Alpha and the Omega, the
Beginning and the End. I will give free water
from the spring of the water of life to anyone
who is thirsty. 7 All those who win the victory
will receive all this. And I will be their God, and
they will be my children. 8 But those who are
cowards, those who refuse to believe, those who
do terrible things, those who kill, those who sin
sexually, those who do evil magic, those who
worship idols, and those who tell lies—they will
all have a place in the lake of burning sulfur. This
is the second death."

9 One of the seven angels came to me. This
was one of the angels who had the seven bowls
full of the seven last plagues. The angel said,
"Come with me. I will show you the bride, the
wife of the Lamb." 10 The angel carried me away
by the Spirit to a very large and high mountain.
The angel showed me the holy city, Jerusalem.
The city was coming down out of heaven from
God.

11 The city was shining with the glory of God.
It was shining bright like a very expensive jewel,
like a jasper. It was clear as crystal. 12 The city
had a large, high wall with twelve gates. There
were twelve angels at the gates. On each gate

नया यरूशलेम

21 फिर मैंने एक नया स्वर्ग और नयी धरती
देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली
धरती लुप्त हो चुके थे। और वह सागर भी अब
नहीं रहा था। 2मैंने यरूशलेम की वह पवित्र नगरी
भी आकाश से बाहर निकल कर परमेश्वर की
ओर से नीचे उतरते देखी। उस नगरी को ऐसे
सजाया गया था जैसे मानों किसी दुल्हन को उसके
पति के लिए सजाया गया हो।

3तभी मैंने आकाश में एक ऊँची ध्वनि सुनी।
वह कह रही थी, "देखो अब परमेश्वर का मन्दिर
मनुष्यों के बीच है और वह उन्हीं के बीच घर
बनाकर रहा करेगा। वे उसकी प्रजा होंगे और स्वयं
परमेश्वर उनका परमेश्वर होगा। 4उनकी आँख से
वह हर आँसू पोंछ डालेगा। और वहाँ अब न कभी
मृत्यु होगी, न शोक के कारण कोई रोना-धोना
और नहीं कोई पीड़ा। क्योंकि ये सब पुरानी बातें
अब समाप्त हो चुकी हैं।"

5इस पर जो सिंहासन पर बैठा था, वह बोला,
"देखो, मैं सब कुछ को नया किए दे रहा हूँ।"
उसने फिर कहा, "इसे लिख ले क्योंकि ये वचन
विश्वास करने योग्य हैं और सत्य हैं।"

6वह मुझसे फिर बोला, "सब कुछ पूरा हो चुका
है। मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही
आदि हूँ और मैं ही अन्त हूँ।" जो भी प्यासा है मैं
उसे जीवन-जल के स्रोत से सेंत-मेंत में मुक्त भाव
से जल पिलाऊँगा। 7जो विजयी होगा, उस सब
कुछ का मालिक बनेगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा
और वह मेरा पुत्र होगा। 8किन्तु कायरों अविश्वासियों,
दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना करने
वालों मूर्तिपूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को
भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा
बँटाना होगा। यही दूसरी मृत्यु है।"

9फिर उन सात दूतों में से जिनके पास सात
अंतिम विनाशों से भरे कटोरे थे, एक आगे आया
और मुझसे बोला, "यहाँ आ। मैं तुझे वह दुल्हिन
दिखा दूँ जो मेमने की पत्नी है।" 10अभी मैं आत्मा
के आवेश में ही था कि वह मुझे एक विशाल और
ऊँचे पर्वत पर ले गया। फिर उसने मुझे यरूशलेम
की पवित्र नगरी का दर्शन कराया। वह परमेश्वर
की ओर से आकाश से नीचे उतर रही थी।

11वह परमेश्वर की महिमा से मण्डित थी। वह
सर्वथा निर्मल यशब नामक महामूल्यवान रत्न के
समान चमक रही थी। 12नगरी के चारों ओर एक
विशाल ऊँचा परकोटा था जिसमें बारह द्वार थे।

was written the name of one of the twelve tribes of Israel. 13 There were three gates on the east, three gates on the north, three gates on the south, and three gates on the west. 14 The walls of the city were built on twelve foundation stones. On the stones were written the names of the twelve apostles of the Lamb.

15 The angel who talked with me had a measuring rod made of gold. The angel had this rod to measure the city, its gates, and its wall. 16 The city was built in a square. Its length was equal to its width. The angel measured the city with the rod. The city was 12,000 *stadia* long, 12,000 *stadia* wide, and 12,000 *stadia* high. 17 The angel also measured the wall. It was 144 cubits high. (The angel was using the same measurement that people use.) 18 The wall was made of jasper. The city was made of pure gold, as pure as glass.

19 The foundation stones of the city walls had every kind of expensive jewels in them. The first foundation stone was jasper, the second was sapphire, the third was chalcedony, the fourth was emerald, 20 the fifth was onyx, the sixth was carnelian, the seventh was yellow quartz, the eighth was beryl, the ninth was topaz, the tenth was chrysoprase, the eleventh was jacinth, and the twelfth was amethyst. 21 The twelve gates were twelve pearls. Each gate was made from one pearl. The street of the city was made of pure gold, as clear as glass.

22 I did not see a temple in the city. The Lord God All-Powerful and the Lamb were the city's temple. 23 The city did not need the sun or the moon to shine on it. The glory of God gave the city light. The Lamb was the city's lamp.

24 The peoples of the world will walk by the light given by the Lamb. The rulers of the earth will bring their glory into the city. 25 The city's gates will never close on any day, because there is no night there. 26 The greatness and the honor of the nations will be brought into the city. 27 Nothing unclean will ever enter the city. No one who does shameful things or tells lies will ever enter the city. Only those whose names are

उन बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत थे। तथा बारहों द्वारों पर इस्राएल के बारह कुलों के नाम अंकित थे। 13इनमें से तीन द्वार पूर्व की ओर थे, तीन द्वार उत्तर की ओर, तीन द्वार दक्षिण की ओर, और तीन द्वार पश्चिम की ओर थे। 14नगर का परकोटा बारह नीवों पर बनाया गया था तथा उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के नाम अंकित थे।

15जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसके पास सोने से बनी नापने की एक छड़ी थी जिससे वह उस नगर को, उसके द्वारों को और उसके परकोटे को नाप सकता था। 16नगर को वर्गाकार में बसाया गया था। यह जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। उस स्वर्गदूत ने उस छड़ी से उस नगरी को नापा। वह कोई बारह हज़ार स्टोडिया पायी गयी। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई एक जैसी थी। 17स्वर्गदूत ने फिर उसके परकोटे को नापा। वह कोई एक सौ चवालीस हाथ था। उसे मनुष्य के हाथों की लम्बाई से नापा गया था जो हाथ स्वर्गदूत का भी हाथ है। 18नगर का परकोटा यशब नामक रत्न का बना था तथा नगर को काँच के समान चमकते शुद्ध सोने से बनाया गया था।

19नगर के परकोटे की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सजाई गयी थी। नींव का पहला पत्थर यशब का बना था, दूसरी नीलम से, तीसरी स्फटिक से, चौथी पन्ने से, 20पाँचवीं गोमेद से, छठी मानक से, सातवीं पीत मणि से, आठवीं पेरोज से, नवीं पुखराज से, दसवीं लहसनिया से, ग्यारहवीं धूम्रकांत से और बारहवीं चन्द्रकाँत मणि से बनी थी। 21बारहों द्वार बारह मोतियों से बने थे, हर द्वार एक-एक मोती से बना था। नगर की गलियाँ स्वच्छ काँच जैसे शुद्ध सोने की बनी थीं।

22नगर में मुझे कोई मन्दिर दिखाई नहीं दिया। क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे। 23उस नगर को किसी सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उसे प्रकाश दें, क्योंकि वह तो परमेश्वर के तेज से आलोकित था। और मेमना ही उस नगर का दीपक है।

24सभी जातियों के लोग इसी दीपक के प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे। और इस धरती के राजा अपनी भव्यता को इस नगर में लायेंगे। 25दिन के समय इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे और वहाँ रात तो कभी होगी ही नहीं। 26जातियों के कोष और धन सम्पत्ति को उस नगर में लाया जायेगा। 27कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ

written in the Lamb's book of life will enter the city.

22 The angel showed me the river of the water of life, clear as crystal. The river flows from the throne of God and the Lamb. [2] It flows down the middle of the street of the city. The tree of life is on each side of the river, and it produces fruit every month, twelve times a year. The leaves of the tree are for healing the nations.

[3] Nothing that God judges guilty will be there in that city. The throne of God and the Lamb will be in the city. God's servants will worship him. [4] They will see his face. God's name will be written on their foreheads. [5] There will never be night again. People will not need the light of a lamp or the light of the sun. The Lord God will give them light. And they will rule like kings forever and ever.

[6] Then the angel said to me, "These words are true and can be trusted. The Lord, the God of the spirits of the prophets, has sent his angel to show his servants what must happen soon: [7] 'Listen, I am coming soon! Great blessings belong to the one who obeys the words of prophecy in this book.'"

[8] I am John. I am the one who heard and saw these things. After I heard and saw them, I bowed down to worship at the feet of the angel who showed them to me. [9] But the angel said to me, "Don't worship me! I am a servant like you and your brothers the prophets. I am a servant like all those who obey the words in this book. You should worship God!"

[10] Then the angel told me, "Don't keep secret the words of prophecy in this book. The time is near for these things to happen. [11] Let anyone who is doing wrong continue to do wrong. Let anyone who is unclean continue to be unclean. Let anyone who is doing right continue to do right. Let anyone who is holy continue to be holy."

[12] "Listen, I am coming soon! I will bring rewards with me. I will repay everyone for what they have done. [13] I am the Alpha and the Omega,

बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

22 इसके पश्चात् उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन देने वाले जल की एक नदी दिखाई। वह नदी स्फटिक की तरह उज्ज्वल थी। वह परमेश्वर और मेमने के सिंहासन के निकलती हुई [2]नगर की गलियों के बीच से होती हुई बह रही थी। नदी के दोनों तटों पर जीवन वृक्ष उगा था। उन पर हर साल बारह फसल लगा करतीं थीं। इसके प्रत्येक वृक्ष पर प्रतिमास एक फसल लगती थी तथा इन वृक्षों की पत्तियाँ अनेक जातियों को निरोग करने के लिए थीं।

[3]वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप नहीं होगा। परमेश्वर और मेमने का सिंहासन वहाँ बना रहेगा। तथा उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे [4]तथा उसका नाम उनके माथों पर अंकित रहेगा। [5]वहाँ कभी रात नहीं होगी और न ही उन्हें सूर्य के अथवा दीपक के प्रकाश की कोई आवश्यकता रहेगी। क्योंकि उन पर प्रभु परमेश्वर अपना प्रकाश डालेगा और वे सदा सदा शासन करेंगे।

[6]फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने सेवकों को, जो कुछ शीघ्र ही घटने वाला है, उसे जताने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा है। [7]'सुनो! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। धन्य हैं वह जो इस पुस्तक में दिए गए उन वचनों का पालन करते हैं जो भविष्यवाणी हैं।'"

[8]मैं यूहन्ना हूँ। मैंने ये बातें सुनी और देखी हैं। जब मैंने ये बातें देखी सुनी तो उस स्वर्गदूत के चरणों में गिर कर मैंने उसकी उपासना की जो मुझे ये बातें दिखाया करता था। [9]उसने मुझसे कहा, "सावधान, तू ऐसा मत कर। क्योंकि मैं तो तेरा, तेरे बंधु नबियों का जो इस पुस्तक में लिखे वचनों का पालन करते हैं, एक सह-सेवक हूँ। बस परमेश्वर की ही उपासना कर।"

[10]उसने मुझसे फिर कहा, "इस पुस्तक में जो भविष्यवाणियाँ दी गयी हैं, उन्हें छुपा कर मत रख क्योंकि इन बातों के घटित होने का समय निकट ही है। [11]जो बुरा करते चले आ रहे हैं, वे बुरा करते रहें। जो अपवित्र बने हुए हैं, वे अपवित्र ही बने रहें। जो धर्मी हैं, वे धर्मी ही करते रहें। जो पवित्र हैं वे पवित्र बने रहें।"

[12]"देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ और अपने साथ तुम्हारे लिए प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। [13]मैं ही

the First and the Last, the Beginning and the End.

14 "Great blessings belong to those who have
washed their robes. They will have the right to
eat the food from the tree of life. They can go
through the gates into the city. 15 Outside the
city are all those who live like dogs—those who
do evil magic, those who sin sexually, those who
murder, those who worship idols, and those who
love to lie and pretend to be good.

16 "I, Jesus, have sent my angel to tell you these
things for the churches. I am the descendant from
the family of David. I am the bright morning star."

17 The Spirit and the bride say, "Come!"
Everyone who hears this should also say,
"Come!" All who are thirsty may come; they can
have the water of life as a free gift if they want it.

18 I warn everyone who hears the words of
prophecy in this book: If anyone adds anything to
these, God will give that person the plagues written
about in this book. 19 And if anyone takes away from
the words of this book of prophecy, God will take
away that person's share of the tree of life and of
the holy city, which are written about in this book.

20 Jesus is the one who says that all of this is
true. Now he says, "Yes, I am coming soon."

Amen! Come, Lord Jesus!

21 The grace of the Lord Jesus be with all people.

अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और
मैं ही अन्तिम हूँ।" मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।

14"धन्य हैं वह जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं।
उन्हें जीवन-वृक्ष के फल खाने का अधिकार होगा।
वे द्वार से होकर नगर में प्रवेश करने के अधिकारी
होंगे। 15किन्तु 'कुत्ते', जादू-टोना करने वाले, व्यभिचारी,
मूर्तिपूजक या प्रत्येक वह जो झूठ पर चलता है और
झूठे को प्रेम करता है, बाहर ही पड़े रहेंगे।"

16"स्वयं मुझ यीशु ने तुम लोगों के लिए और
कलीसियाओं के लिए, इन बातों की साक्षी देने को
अपना स्वर्गदूत भेजा है। मैं दाऊद के परिवार का
वंशज हूँ। मैं भोर का दमकता हुआ तारा हूँ।"

17आत्मा और दुल्हिन कहती है, "आ!" और जो
इसे सुनता है, वह भी कहे, "आ!"और जो प्यासा
हो वह भी आये और जो चाहे वह भी इस जीवन
दायी जल के उपहार को मुक्त भाव से ग्रहण करें।

18मैं शपथ पूर्वक उन व्यक्तियों के लिए घोषणा
कर रहा हूँ जो इस पुस्तक में लिखे भविष्यवाणी के
वचनों को सुनते हैं, उनमें से यदि कोई भी उनमें
कुछ भी और जोड़ेगा तो इस पुस्तक में लिखे विनाश
परमेश्वर उस पर ढायेगा। 19और यदि नबियों की
इस पुस्तक में लिखे वचनों में से कोई कुछ घटायेगा
तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखे जीवन-वृक्ष और
पवित्र नगरी में से उसका भाग उससे छीन लेगा।

20यीशु जो इन बातों का साक्षी है, वह कहता है,
"हाँ! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ।"

आमीन! हे प्रभु यीशु आ!

21प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे! आमीन।